वर्ष 1 अंक 12 अगस्त 2009

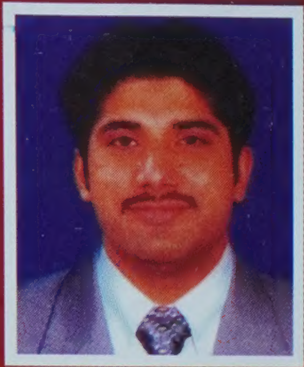
सबका भला करो भगवान

मूल्य 10 रुपए

धर्म स्थल विशेषांक-2



हृदय में हमरे
कृष्ण कन्हैया
सबका प्यारा
रास रचैया



भारतीय मानक ब्यूरो
द्वारा प्रमाणित



संजय सोनी

खेमचन्द सोनी

22/22 916 Gold Ornaments & Bombay Variety

मानकः पथप्रदर्शकः
हॉल मार्किंग ज्वैलरी



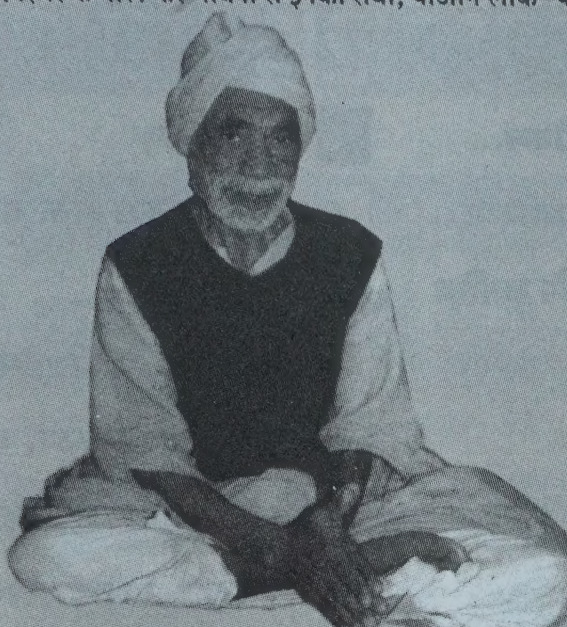


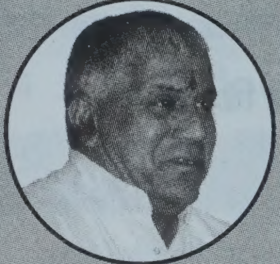
D.K. Jewellers

मालवीय नगर में आपका अभिनन्दन करता है।

ARIHANT PLAZA
Near Petrol Pump, Calgiri Road
Malviya Nagar, Jaipur - 302 017
Phone : 9928523456, 9829220561, 4021117

बूढ़े बच्चे और बीमार, हैं परमेश्वर के यार! करें भावना से इनकी सेवा, पाओंगे लोक-परलोक में सुख अपार !!





'सत्तनामसहाइ' पुष्कर प्रसाद
सेवा संकल्प धारक
संत हिरदाराम नगर, भोपाल

गलतियाँ दिखाती हैं जीवन की सही राह

22 जुलाई 2009

सावन आयो
मोरे गाम
मन में मेरे
हिरदाराम

सर्वजन में
अलख जगाऊँ
पर सेवा की
पाग पगाऊँ

साँस-साँस से
सेवा बरसे
तेरे दर्शन को
मन तरसे

जन-जन में
बस जाए सेवा
आशीष दो
हे ! मेरे देवा

सुबह शाम
यही मैं गाऊँ
सेवा की
परसादी पाऊँ

सबकी पीड़ा
बाबा हर लो
मुझको अपनी
शरण में ले लो

सावन का महीना, हुई नई इक भोर। सचमुच सावन के आते ही फ़िज़ा परिवर्तित हो गई है। एक बार फिर आपके हाथ में **सबका भला करो भगवान** का विशेष अंक **धर्म स्थल विशेषांक-2** और के रूप में आपके हाथ में है। आशा है, पूर्व की भाँति पसन्द आएगा।

इस महीने दो खास त्यौहार हैं। पहला बहन-भाई के पवित्रम संबंधों का त्यौहार-राखी और फिर मदन गोपाल का जन्मदिन अर्थात् जन्माष्टमी। ये दोनों ही पर्व भारतीय जनमानस को आल्हादित करने वाले हैं। जहाँ तक हमारे आल्हादित होने की बात है हम तो अपने सेवा उद्देश्यों और आप सुधि पाठकों को संतुष्ट कर आल्हादित होते हैं।

आल्हादित आप भी हो सकते हैं। अपने आस-पास पर नज़र डालें। आपको कई मौके मिलेंगे सेवा करने के। सेवा के अधिक से अधिक कार्यों का सम्पादन करें। अपने से जुड़े लोगों को आल्हाद बाँटें, निश्चित ही आप भी आल्हादित होंगे।

सबका भला करो भगवान

ईश्वर मेहरचंदानी

वर्ष : 01 | अंक : 12 | अगस्त 2009



मूल्य एक प्रति : 10 रु. | वार्षिक : 100 रु.
छह वर्ष : 500 रु. | आजीवन : 1100 रु.
विदेश (वार्षिक) : 20 डॉलर

प्रेरणा
परम पूज्य ब्रह्मलीन स्वामी हिरदाराम साहिब जी (पुष्कर राज)

मुख्य संरक्षक एवं आशीर्वाद
श्रद्धेय श्री सिद्ध भाऊ साहिब जी

मुख्य सलाहकार
महेश दयारामानी
टीकमदास पारवानी
जगदीश वच्छानी

प्रधान सम्पादक
ईश्वर मेहरचन्दानी

कार्यकारी सम्पादक
गजेन्द्र रिझवानी

प्रबंध सम्पादक
राजेन्द्र आहूजा

सलाहकार
विष्णु गुरनानी
प्रकाश रिझवानी

चित्रांकन
त्रिभुवन सिंह

विज्ञापन सहयोग
प्रदीप मेहरचन्दानी

साज-सज्जा व परिकल्पना
महेश रिझवानी
रामलाल कुमावत

सम्पादकीय पता
2/194, एसएफएस, अग्रवाल फार्म
मानसरोवर, जयपुर-302020
फैक्स : 0141-2576492
मोबाइल : 93515-99276
ईमेल : sbkb_1@yahoo.com

पत्रिका का सदस्यता शुल्क आप सीधे हमारे बैंक खाते में भी जमा करवा सकते हैं।
श्री गोपाल कृष्ण सेवा समिति
भारतीय स्टेट बैंक, कँवर नगर, जयपुर
खाता संख्या : **30260912563**

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक टीकम दास पारवानी द्वारा प्रेस-महेश प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स 926-बी, ग्रीन हाउस, जड़ियों का रास्ता, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003 मो. : 93145-07094 से मुद्रित एवं 2/194, एस.एफ.एस., अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर-302020 मोबाइल : 093515-99276 से प्रकाशित सम्पादक : श्री ईश्वर मेहरचन्दानी

संरक्षक

श्री बाबूलाल गुरनानी
श्री चन्द्र प्रकाश खेतानी
श्री दयाराम पारवानी
श्री धर्मदास चंचलानी
श्री ईश्वर आडवानी
श्री ईश्वरदास मूलराजानी
श्री हरीशंकर अग्रवाल (धानोता वाले)
श्री जगदीश बालानी (जे.डी. केटरर्स)
श्री जे.एन. गोलानी
श्री कन्हैयालाल खानचन्दानी
श्री किशोर मेहरचंदानी
श्री लहरूमल शेवकरामानी
श्री लालचन्द कमलानी
श्री मुरली कुमार
श्री मुरलीधर गोलानी (अहमदाबाद)
श्री नरेन्द्र लक्खी
श्री नोतनदास कर्मचन्दानी
श्री नारायण दास केवलानी
श्री प्रकाश रिझवानी
श्री रमेश चावला
श्री साजनदास हीरानी (सोजत वाले)
श्री सुगनोमल गुरनानी
श्री विष्णु गुरनानी

सेवा की अक्षरमाला में, है बस दो का मान।
एक को सेवा, दूजे को मिलता पुण्य का दान॥

जो गाया ककहरा सेवा का, पूर्ण हुआ इंसान।
सेवा का यह सबक ऐसा, मिले सारा जहान॥

सेवा का कार्य ऐसा कार्य है, जिससे दोनों ही पक्ष लाभान्वित होते हैं। जिसने सेवा पाई है, उसे तो मिलता है सेवा का लाभ और जो सेवा कर रहा है वह भी लाभ में रहता है क्योंकि उसे अपनी सेवा के प्रतिफल स्वरूप पुण्य रूपी दान की प्राप्ति होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि सेवा करना घाटे का सौदा नहीं है। सेवा से दोनों ही पक्षों को लाभ होता है।

जिस मनुष्य ने अपना जीवन, अपना सर्वस्व सेवा कार्य में लगा दिया है, वही पूर्ण मनुष्य है। कहने का तात्पर्य यह है कि सेवा कार्य से ही मनुष्य पूर्णता को प्राप्त करता है। बिना सेवा के मानव जीवन अधूरा है। सेवा ऐसा कार्य है, जिसको करने से मनुष्य को यह पूरा संसार मिल जाता है अर्थात इस जगत में उसका आना, रहना और जीना सार्थक हो जाता है।

प्रेरणा : अपने मनुष्य जीवन को सफल व सार्थक करना है तो सेवा अवश्य करें।

सबका भला करो भगवान

गजेन्द्र रिझवानी

पीड़ित मानव की सेवा दुनिया का सबसे बड़ा धर्म है।

गलतियाँ दिखाती हैं जीवन की सही राह

कहते हैं मनुष्य गलतियों का पुतला होता है। इसमें गलत भी कहां है। जब देवता और भगवान गलती कर सकते हैं, तो फिर मनुष्य की तो बिसात ही कहां है। और फिर मनुष्य तो वह शै है जो अनजाने तो छोड़ो जानबूझकर भी गलतियां करता है। और तो और गलती करके फिर गलती से भी अपनी गलती स्वीकार नहीं करता।

कई लोग कहते हैं कि जो मनुष्य गलती न करे वह मनुष्य ही कहां होता है, देवता नहीं हो जाता है। यानि कि यह तय है कि अगर आप मनुष्य हैं तो गलतियां तो करेंगे ही। गलती से भी ऐसा नहीं हो सकता कि आप गलती न करें।

अब असल मुद्दा। यह तो तय है कि मनुष्य का स्वभाव है गलतियां करना। देखा जाए तो गलती करना गलत नहीं है।

गलत है-गलती को स्वीकार न करना। कहावत भी है कि जो मनुष्य गलती करके स्वीकार कर ले वह श्रेष्ठ होता है। कुल लब्बोलुबाब यह कि गलती हो जाए तो गलत नहीं हैं लेकिन जाने या अनजाने गलती करके स्वीकार न करना गलत है।

धर्मगुरु पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एक जगह कहते हैं कि गलतियों को अपने सिर पर रखकर बोझ मत बनाओ। गलतियों का बोझ आपको मार सकता है। गलतियों को अपने पैरों तले रखो। अपनी गलतियों का इस्तेमाल अपने जीवन को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में करो।

बहुत बड़ी बात बहुत ही साधारण तरीके से कही गई है लेकिन समझ में आए तब न। हमारी फितरत ही ऐसी है कि ऐसी बातों को हम गलती से भी समझने का प्रयास नहीं करते।

संत-महापुरुष और पीर-फकीर भी कहते हैं कि गलतियाँ करना गुनाह नहीं है। गलतियों को सुधारा जा सकता है। गलतियों का पुनरावतन नहीं होना चाहिए यानि कोई गलती दोहराई नहीं जानी चाहिए। गलती से सीख लेकर, उसके कारण पहचानकर, उसके परिणाम का अहसास कर उचित निर्णय लेना बुद्धिमता ही नहीं श्रेष्ठ मानवीय गुण का भी परिचायक है। वास्तविक रूप से देखा जाए तो गलतियां किसी भी मनुष्य की सफलता की रीढ़ बन सकती हैं। इस दुनिया में शायद ही ऐसा कोई महान व्यक्ति होगा, जिसने जीवन में गलतियां न की हों। फर्क सिर्फ यही है कि उन्होंने अपनी गलतियों से सीखा, इसलिए महान बने। जबकि इसके विपरीत सामान्य मनुष्य गलतियों से सीखना तो दूर उनको स्वयं न मानकर उल्टे दूसरों पर भी थोपने का प्रयास करता है। आप इसे मनुष्य की एक और फितरत कह सकते हैं।

अब मनुष्य है तो गलती तो करेगा ही, क्योंकि वह मनुष्य है। लेकिन आप मनुष्य से थोड़ा इतर बनने का प्रयास करें।

जितना अधिक प्रयास करेंगे उतने अधिक श्रेष्ठ मनुष्य बनेंगे। जैसे आप ने गलती मान ली तो आप अच्छे इंसान हैं। गलती मान भी ली और उसका निराकरण या पश्चाताप भी कर लिया, इसका मतलब आप बहुत अच्छे इंसान हैं।

गलती को मानकर, सुधारकर और फिर उसके कारण का विश्लेषण कर यह प्रयास करते हैं कि वह फिर से घटित न हो तो आप महान इंसान बनने की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। और अगर इसी रास्ते पर आगे चलते हुए आप अपनी गलतियों से सीख लेते हैं और उस सीख को अपनी और सर्व जगत की उन्नति का मार्ग बनाते हैं तो फिर आप महान इंसान हैं।

यानि कि एक छोटी सी गलती आपको मनुष्य के दर्जे से गिरा भी सकती है तो महान भी बना सकती है। आप क्या बनना पसंद करते हैं, यह आप अच्छी तरह जानते हैं। मनुष्य के इस प्रकार महान बनने का रास्ता मुश्किल दिखलाई जरूर देता है लेकिन है बहुत आसान। देर सिर्फ इतनी ही है कि बस, गलती मानिये।

अगर बोलना है तो कम से कम बोलो। एक शब्द से काम चले तो दो नहीं।

पारब्रह्म के तेज का, कैसा है उनमान।
कहिबे कूँ सोभा नहीं, देख्या ही परवान।

कर्मयोगी संत बाबा हिरदाराम साहिब

दु:खियों की सेवा करके आपके मन को असीम शांति मिलती है।

यह है नाम की शक्ति, साहिब जी ने भी कहा है :

मेरे राम राइ तूं संता का संत तेरे
तेरे सेवक कउ भउ किछु नाहीं जमु नहीं आवै नेरे।

संत जी के स्वयं के जीवन में भी प्रभु स्मरण की शक्ति से आपदाएँ टलने के कई ऐसे कौतुक हुए हैं। इस प्रकार नाम स्मरण की शक्ति से संत कँवरराम ने चोरों को भगाया और पूरे गाँव के लोगों की जानें बचाईं। यह करिश्मा सुनकर संत जी की पूज्य माता साहिब और दादा साहिब जी ने जब सुना तो वे बहुत प्रसन्न हुए। संत जी की माता ने संत जी की ऐसी अवस्था देखकर भगवान को धन्यवाद दिया और अपने ससुर जी की ओर मुँह किया तो माता के मुख से भी अनायास ही ये वचन निकले कि दादा आशीर्वाद देना कि बच्चे पर जो फकीरी चोले का रंग चढ़ा है उस पर कभी कोई आँच नहीं आए। दादा साहिब ने भी आशीर्वाद देते हुए कहा 'कभी नहीं आएगी'।

कुछ समय पश्चात संत जी अपने गाँव में आये और घर के बाहर एक चबूतरे पर आकर बैठे, बड़ा चोला, काली दाढ़ी, ब्रह्मचर्य का तेज और भक्ति की शक्ति, क्या सुन्दर स्वरूप था सन्त जी का। चेहरा चमक रहा था जैसे कोई महान योगी सामने हो। फिर तो सभी लोग उनके पास आकर बैठ गए और सभी ने यह इच्छा जाहिर की कि संत जी को अपने घर ले जाएँ। संत जी ने कहा कि सबको यहाँ लेकर आओ जिससे मैं दर्शन करके उनसे आशीर्वाद लूं। लोगों ने कहा कि आप दरवेश फकीर हो हमें आशीर्वाद दो, हमारे घर चलकर घर भी पवित्र करो और सभी को दर्शन देकर कृतार्थ करो। इस पर संत जी ने कहा मैं इसी गाँव में जन्मा हुआ बालक हूँ इसलिए सभी को यहाँ लेकर आओ। फिर सभी वहाँ आए और उनके साथ वह दादी भी आई, जिन्होंने संत जी का पालन-पोषण किया था। उस दादी ने जब संत जी को देखा तो वह गद्-गद् हो गई। जो संस्कार उन्होंने बालक को दिए थे, वह अपनी मेहनत सफल होती देख ईश्वर को धन्यवाद देने लगी कि हमारे कुल का एक ऐसा दीपक चमका है जो सारे संसार को रोशन करेगा। दादी ने भी संत जी को प्यार से घर चलने और खाना खाने के लिए कहा। संत जी त्यागी थे, उन्होंने कहा 'दादी, अब मैं घर नहीं चलूँगा। जब ये घर छूटेगा तभी गुरु का घर मिलेगा।' फिर उन्होंने दादी को कहा कि 'मजा मारता है, त्याग तारता है।' झुककर पैर छूकर आशीर्वाद लिया और कहा कि दादी आशीर्वाद दो कि इस फकीरी चोले पर कोई आँच न आए। इसी प्रकार संत जी अपनी माता से भी आशीर्वाद लिया।

उनकी दादी 108 साल की हुई लेकिन लाठी कभी नहीं उठाई, बिल्कुल हष्ट-पुष्ट, सत्य और भक्ति का बल था, फिर भी उन्होंने संत जी से कहा 'आप दरवेश हो आशीर्वाद देना कि किसी का मोहताज न होना पड़े और ज़िन्दगी के आखिरी दम तक ईश्वर का स्मरण करती रहूँ।' संत जी ने फरमाया 'यह बात सोलह आने सच्ची है कि आपको कोई आंतरिक या बाहरी चोट नहीं आएगी और आप हमेशा गुरबाणी का पाठ करती रहोगी।' दादी साहिब को सारा जपुजी साहिब का पाठ याद था और रोज़ पढ़ती थी, गाँव के सभी लोग जपुजी साहिब का पाठ करते थे। भाई तनुराम साहिब जी तो कार्तिक महीने में चालीसा करते थे। चालीस दिन अन्न ग्रहण नहीं करते थे, सारे गाँव के दरवाजों पर नीम का दातुन रखकर आते थे और सभी को कहते थे कि 'उठकर जपुजी साहिब का पाठ करो, स्नान करो, ईश्वर का स्मरण करो और कहो सत्नाम।' यह भाई तनुराम साहिब जी एक प्रकार की सेवा थी जो कि वे बड़े चाव से करते थे। उन्हें भी जपुजी साहिब मुँहजबानी याद था और स्वयं जब पाठ करते थे तो ऐसे बुलंद आवाज़ में करते थे कि उनके साथ पेड़ों में से भी आवाज़ आती थी। भाई तनुराम साहिब जी ने गृहस्थ जीवन बिताते हुए भी तपस्या और प्रभु का स्मरण किया।

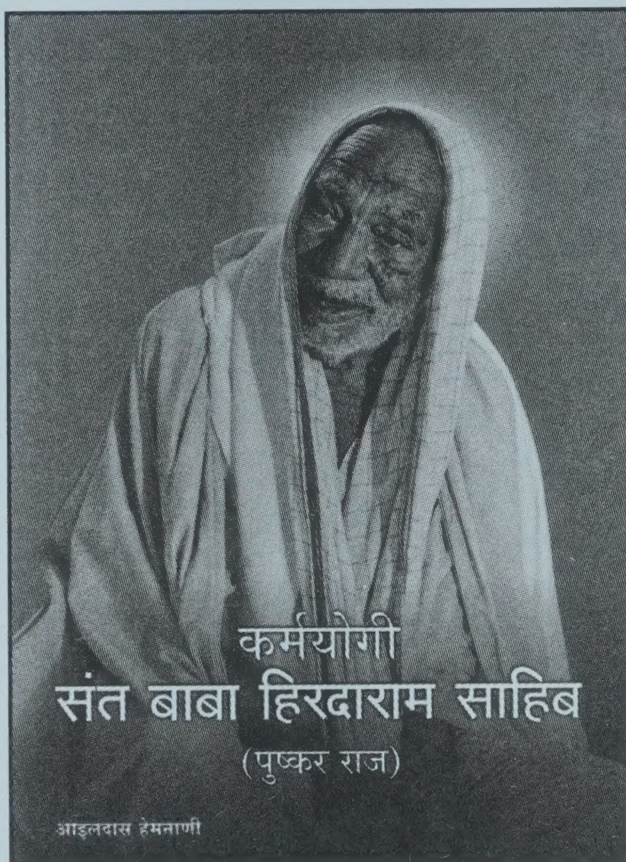
मौन और दृढ़ विश्वास यही तुम्हारी सबसे बड़ी शक्ति है।

पूत पियारो पिता कौं, गौहनि लागो धाइ।
लोभ मिठाई हाथि दे, आपण गयो भुलाइ।

भूखे को अन्न दें पहनने को कपड़े आपका परलोक सुधरेगा।

बिहण के गाँव में शिवरात्रि बाग में वरसी लगती थी, वहाँ भाई तनुरामसाहिब जी की समाधि थी। सभी गाँव वाले वहाँ सिर झुकाकर आशीर्वाद प्राप्त करते थे (यहाँ भी बैरागढ़ में भाई तनुराम साहिब जी की समाधि है जहाँ हर शिवरात्रि को मेला लगता है और सत्संग होता है)। ये दरवेश ऐसे हैं जो कि इच्छा रखे हो पूरी होती है। जिन्हें तेज बुखार होता है, वे केवल भाई तनुराम साहिब जी बाग वाले कुएं का नाम लेकर स्नान करें तो बुखार ठीक हो जाता है, ऐसी करामात के वे धनी थे कि आज भी उनकी शक्ति काम कर रही है।

संत जी के भक्त श्री साधुराम मामताणी ने 1950 में दिल्ली में भगत वाधुराम साहिब जी की पहली वरसी मनाई। उस वक्त स्वामी टेऊंराम साहिब के गादीसर संत शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द साहिब जी पधारे और धूम-धाम से वरसी मनाई गई। श्री साधुरामजी की सच्ची श्रद्धा हुई कि संत हिरदाराम जी के दर्शन हों इसलिए उनका पता मालूम करके उन्हें खत लिखा कि हमने यहाँ दिल्ली में भगत वाधुराम साहिब जी की वरसी मनाई है, संत जी बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उत्तर में खत लिखा कि यह कार्य अच्छा है और आने वाले समय में भी ऐसे अच्छे काम करते रहना चाहिए। ज़िन्दगी एक कच्चा धागा है इसका पता नहीं ये कब टूट जाए।



सन 1953 के अंत में संत जी दिल्ली की ओर रवाना हुए। श्री साधुराम मामताणी ने संत जी से बात कही कि राजेन्द्रनगर सिन्धी गुरुद्वारे को म्युनिसिपल कार्पोरेशन ने नोटिस दिया है कि 48 घण्टों के अन्दर गुरुद्वारा खाली करो क्योंकि बिना मंजूरी के सरकारी ज़मीन पर बनाया गया है और अगर खाली नहीं किया तो हम उसे तोड़ देंगे।

संत जी भी घूमते-घूमते राजेन्द्रनगर गुरुद्वारे में पहुँचे। संत जी ने गुरुद्वारे में बैठकर शांति से ध्यान करके कुछ समय के पश्चात कहा कि अरे साधुराम, एक कागज, पैन्सिल तो लेकर आओ, ये मंत्र लिखो **'जिनि उपाइआं जगु चिंता बि करणी तांहिं'** यह मंत्र लिखकर दरबार साहिब में लटका दो, इस गुरुद्वारे का नाम कोई भी नहीं लेगा। भला दरवेशों के वचन कैसे खाली जाएँगे, साहिब जी ने कहा है **'उत्तम सलोक साधके बचन अमुलक लाल एहि रतन'** दूसरी ओर कहा है **'प्रभ जी बसहि साधकी रसना'**- बस संत जी के वचन सौ टका सही निकले और उस गुरुद्वारे का बाल भी बाँका नहीं हुआ।

साहिब जी ने फरमाया है **'सतगुरु है बोहथा विरले किनै विचारिआ करि क्रिपा पार उतारिआ'** एक बार श्री गुरुमुख दास बेलाणी जो कि दिल्ली में इन्जीनियरिंग कम्पनी में ब्रांच मैनेजर थे, उससे स्वामी जी ने पूछा कि भाई बेलाणी तनख्वाह कितनी मिलती है, इस पर उसने उत्तर दिया कि 900 रुपये महीना तनख्वाह मिलती है। अब तू नौकरी छोड़ और अपना व्यापार कर ले बहुत फायदा होगा। इस पर बेलाणी ने संत जी को कहा कि ऐसा ही करूँगा लेकिन उसने ऐसा किया नहीं। दूसरे साल संत जी दिल्ली गए तो देखा कि बेलाणी वहीं नौकरी कर रहा है, उन्होंने फिर उससे कहा कि बेलाणी दो-तीन महीनों में नौकरी छोड़, बहुत फायदा होगा।

अगले अंक में लगातार ...

जीव सेवा संस्थान, भोपाल द्वारा गत वर्ष श्री आइलदास हेमनाणी द्वारा लिखित पुस्तक कर्मयोगी संत बाबा हिरदाराम साहिब (पुष्कर राज) का प्रकाशन किया गया था। यह पुस्तक सिन्धी देवनागरी में है। पाठकों के लाभार्थ उक्त पुस्तक का हिन्दी अनुवाद 'सबका भला करो भगवान' में धारावाहिक प्रकाशित किया जा रहा है। हिन्दी अनुवाद श्री प्रकाश लालवानी द्वारा किया गया है।

मौन निद्रा के समान है, क्योंकि वह ज्ञान को ताजा कर देता है।

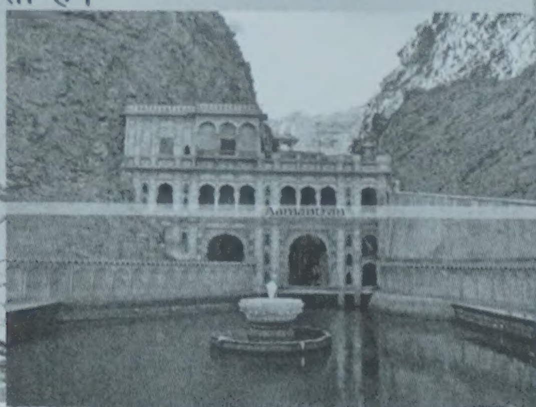
पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
ऐकै आषिर पीव का, पढ़ैं सु पंडित होइ।

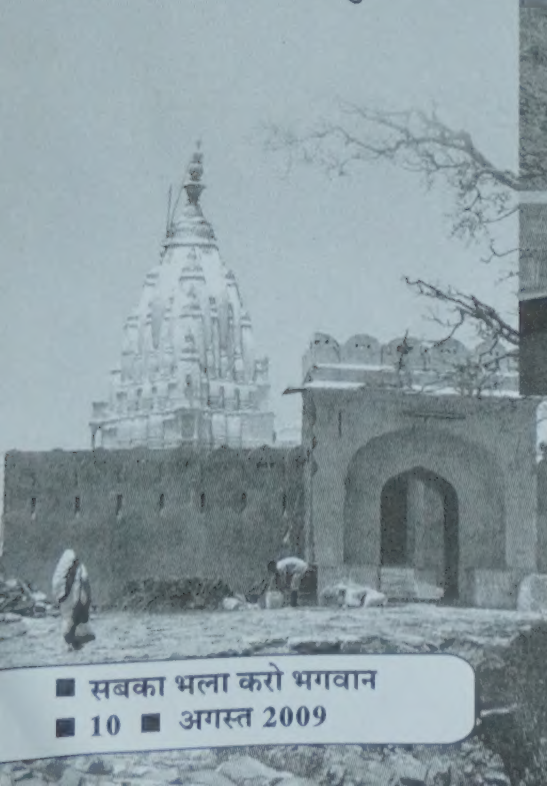


गलता मंदिर

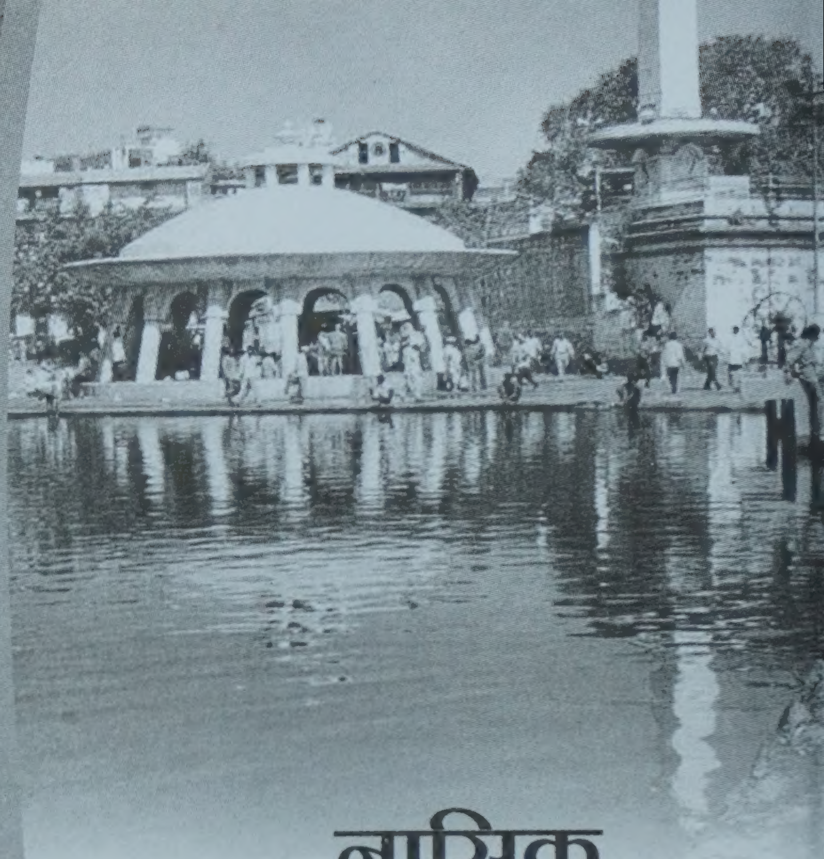


राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी जयपुर से 10 कि.मी. की दूरी पर गलता तीर्थ स्थित है। सुरम्य पहाड़ियों के बीच बना सूर्य मंदिर और साथ में तीन स्नान कुण्ड, कुल मिलाकर यह एक प्राचीन और अनूठा तीर्थ है। इस तीर्थ की स्थापना ऋषि गालव द्वारा की गई थी, जिन्होंने यहाँ रहकर तपस्या की। लगभग दो दशक पूर्व देश के प्रमुख औद्योगिक बिड़ला परिवार द्वारा इस प्राचीन तीर्थ स्थली का पुनरोद्धार कराया गया। इस तीर्थ में तीन स्नान कुण्ड बने हुए हैं, जो कि एक दूसरे के ऊपर स्थित हैं। इनमें से पहला स्नान कुण्ड पुरुषों के लिए एवं दूसरा महिलाओं के लिए है। एक गोमुख से इन कुण्डों में पानी आता है। काले मुँह के बंदर इसके तीर्थ क्षेत्र में बहुतायत से पाये जाते हैं। बारिश के दिनों में इस पहाड़ी तीर्थ पर कई झरने बह निकलते हैं, जिनसे वातावरण और भी सुरम्य हो जाता है।





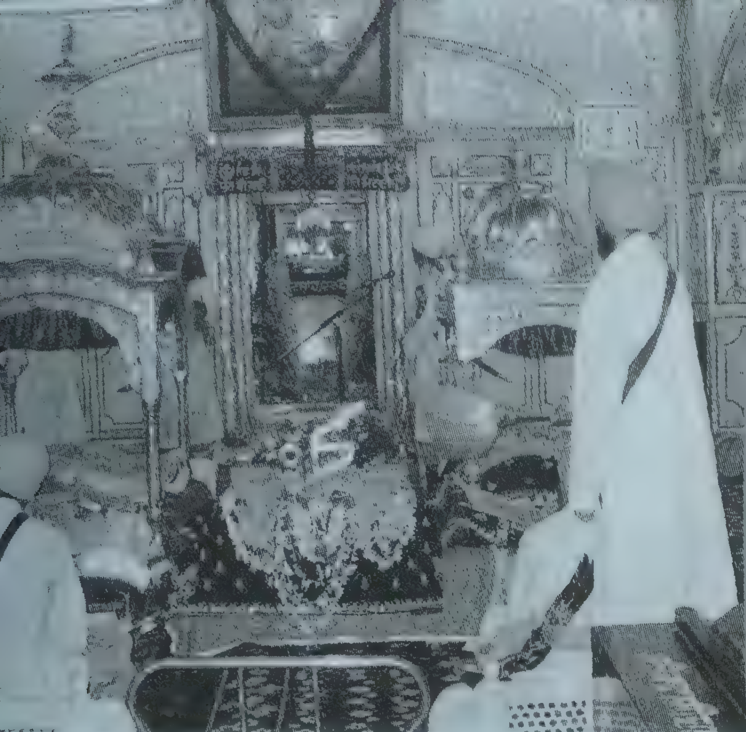




नासिक

कहा जाता है कि अपने 14 वर्ष के वनवास के दौरान भगवान श्रीराम ने नासिक में भी वास किया था। यह वही स्थान है जहाँ लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखां की नाक (नासिका) काटी गई थी। यहाँ पर रामायणकालीन कई स्थान हैं, जिनमें सीता गुफा भी है, जहाँ से रावण द्वारा सीता का अपहरण किया गया था। इस शहर की उत्तरी सीमा के रूप में गोदावरी नदी बहती है। वर्तमान में यह शहर चीनी मिलों, शराब निर्माण और भारत सरकार के सिक्योरिटी प्रेस की वजह से भी जाना जाता है। एक अन्य धार्मिक स्थल शिरड़ी और त्रियम्बकेश्वर जाते समय नासिक रास्ते में पड़ता है और अपने धार्मिक महत्व के कारण लोगों के आकर्षण का केन्द्र है।





नांदेड़

महाराष्ट्र राज्य के मराठवाड़ा क्षेत्र का दूसरा सबसे बड़ा शहर–नांदेड़ सिक्खों के महत्वपूर्ण पवित्र स्थान के रूप में जाना जाता है। गोदावरी नदी के उत्तरी तट पर बसा यह ऐतिहासिक स्थान सिक्ख गुरुद्वारों के लिए प्रसिद्ध हैं। प्रथम शताब्दी ई. में नांदेड़ कंधार के राजा सोगदेव की राजधानी थी। चौथी शताब्दी में यहाँ चालुक्यों का शासन था। औरंगजेब के शासन के समय यह तेलंगाना की राजधानी बना। वर्ष 1708 में सिक्खों के 10 वें गुरु गुरु गोविन्द सिंह जी ने यहाँ स्थायी रूप से निवास करते हुए गुरुग्रंथ साहिब की स्थापना की थी। मूलतः सिक्खों का यह पावन तीर्थ आज विभिन्न संस्कृतियों का अनुठा संगम है।

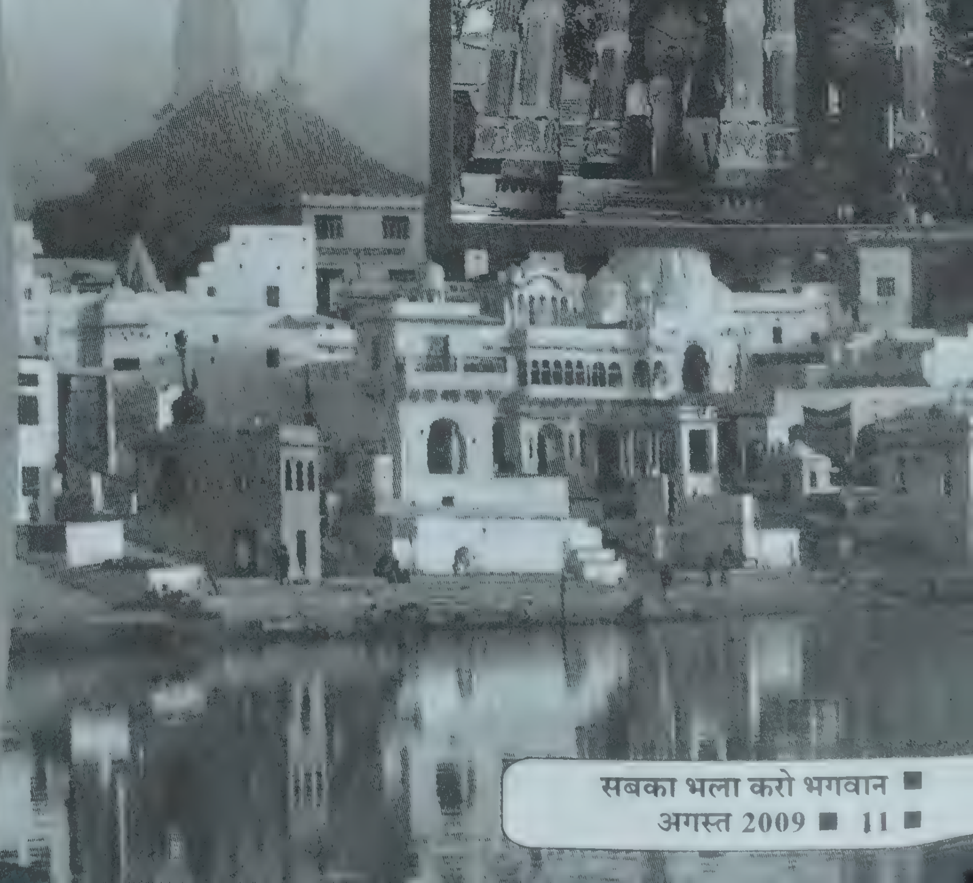


तीर्थों की नानी 'पुष्कर'

समस्त तीर्थों की नानी के नाम से विख्यात पुष्कर तीर्थ राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित है। हिन्दू धर्मालुओं के लिए तीर्थराज और विदेशी पर्यटकों के लिए एक पर्यटन स्थल के रूप में यहाँ का सबसे बड़ा आकर्षण पुष्कर झील है, जिसके किनारे पर पाँच प्रमुख मंदिरों सहित कई छोटे–छोटे मंदिर और 52 घाट बने हुए हैं। पुष्कर में ही चौदहवीं शताब्दी का बना ब्रह्मा मंदिर है, जो कि देश का एक मात्र ब्रह्मा मंदिर है। पुष्कर तीर्थ का उल्लेख रामायण में भी आता है। कहा जाता है कि यहाँ मुनि विश्वामित्र द्वारा तपस्या की गई थी। श्राप मुक्ति के पश्चात् अप्सरा मेनका भी स्नान के लिए यहाँ आई थी।

प्राप्त इतिहास के अनुसार परिहार शासकों द्वारा पुष्कर की स्थापना की गई थी। कालान्तर में मंडोर के प्रतिहारों द्वारा लूनी नदी के किनारे तटबन्ध बनाकर झील का निर्माण किया गया, पुराने महलों का पुर्ननिर्माण कराया गया और धर्मशालाऐं बनवाई गई। मुनि पाराशर का जन्म पुष्कर में ही हुआ था, जिनके वंशज इस क्षेत्र में आज भी पाये जाते हैं। पुष्कर के अन्य धार्मिक स्थानों में वराह मंदिर, सावित्री मंदिर, आप्तेश्वर महादेव मंदिर, वैकुण्टनाथजी का मंदिर आदि शामिल हैं। पुष्कर झील के किनारे बने वराह घाट पर शाम को होने वाली पूजा अत्यन्त आकर्षक, अद्भुत और दर्शनीय होती है।





सारनाथ

बौद्ध धर्म का पावन स्थल-सारनाथ, उत्तरप्रदेश में वाराणसी के उत्तर पूर्व में स्थित है। एक किंवदंती के अनुसार जब भगवान बुद्ध का जन्म होने को था, उससे पूर्व कुछ देवताओं ने इसी स्थान पर उतर कर 500 ऋषियों के सम्मुख उनके जन्म की घोषणा की थी और हवा में लुप्त हो गये थे। ऐसा माना जाता है कि उनके लुप्त होते समय उनके कुछ अवशेष इस स्थान पर रह गये थे।



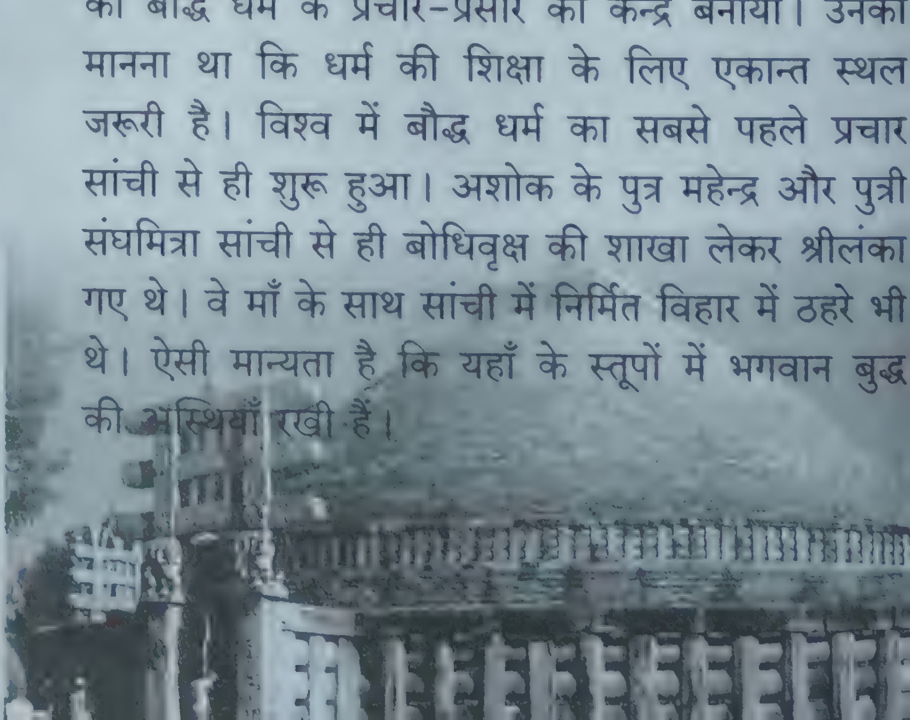
भगवान बुद्ध ने जब बोध गया में कैवल्य ज्ञान प्राप्त किया तो उसके बाद वे यहाँ चले आये थे। गौतम बुद्ध ने जब यहाँ गंगा नदी को पार करना चाहा तो उनके पास मांझी को देने के लिए पैसे नहीं थे। जब राजा बिम्बसार को इस बारे में पता चला तो उन्होंने संन्यासियों के लिए शुल्क को समाप्त कर दिया। इसी स्थान पर गौतम बुद्ध को पुराने छूटे हुए पाँच साथी भी मिले थे। इन पाँच भिक्षुओं को गौतम बुद्ध ने अपना पहला धर्मोपदेश दिया था। यही पर उन्होंने प्रबुद्ध लोगों के संघ की स्थापना की थी। यहीं से गौतम बुद्ध ने 60 भिक्षुओं को विभिन्न दिशाओं में यात्रा कर धर्म प्रचार के लिए रवाना किया था। कालान्तर में सारनाथ बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केन्द्र बन गया था। सारनाथ में सम्राट अशोक द्वारा निर्मित 128 फुट ऊँचा और 93 फुट व्यास का स्तूप तथा अन्य अवशेष दर्शनीय है। कहा जाता है कि यह स्तूप उस जगह बना हुआ जहाँ बुद्ध पहली बार अपने चेलों से मिले थेऔर उन्हें उपदेश दिया था। सारनाथ बौद्ध अनुयायियों के लिए कुशीनगर, बोधगया और लुम्बिनी के पश्चात् चौथा महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। वर्तमान में यहाँ थाईलैण्ड, जापान, तिब्बत और म्यांमार जैसे देशों के विभिन्न शैलियों में बने मठ यहाँ स्थापित हैं, जो बौद्ध धर्म की वैश्विक संस्कृति और वास्तुकला का अनुभव कराते हैं। यह उल्लेखनीय है कि भारत का राष्ट्रीय चिन्ह सारनाथ से ही लिया गया है।



सांची

भगवान बुद्ध का मानना था कि सभी वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं। जीवन भी परिवर्तनशील है। जैन दर्शन भी परिवर्तन को मानता है किन्तु वह नित्यता को भी स्वीकार करता है। शरीर या पर्याय बदलता है, किन्तु आत्मा नित्य है, अजर-अमर है। पुनर्जन्म का सिद्धान्त भारतीय दर्शन की एक प्रमुख विशेषता है। बुद्ध परिवर्तनशील दृष्ट धर्मों के अतिरिक्त किसी अदृष्ट स्थायी द्रव्य को नहीं मानते थे। अत: उन्होंने आत्मा को नहीं माना, यही अनात्मवाद बौद्ध धर्म का बहुत बड़ा सिद्धान्त बन गया। पुनर्जन्म का सिद्धान्त भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषता है। आत्मा की नित्यताया अमरता को स्वीकार किए बिना पुनर्जन्म को सिद्ध करना कठिन हो जाता है। जातक कथाओं में भगवान बुद्ध के ही पुनर्जन्मों के बहुत रोमांचक वृत्तान्त लिखे हैं। सांची के स्तूपों में जातक कथाओं के माध्यम से अद्‌भुत शिल्प सौन्दर्य द्वारा भगवान बुद्ध के पूर्वजन्मों के वृत्तान्तों को दर्शाया गया है।

सांची मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में बेतवा और बेस नदी के तट पर विदिशा नगरी से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सांची के इन मनोरम स्तूपों का निर्माण सम्राट अशोक ने करवाया था। सम्राट अशोक ने विदिशा निवासी पत्नी के कहने पर ही सांची को बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार का केन्द्र बनाया। उनका मानना था कि धर्म की शिक्षा के लिए एकान्त स्थल जरूरी है। विश्व में बौद्ध धर्म का सबसे पहले प्रचार सांची से ही शुरू हुआ। अशोक के पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा सांची से ही बोधिवृक्ष की शाखा लेकर श्रीलंका गए थे। वे माँ के साथ सांची में निर्मित विहार में ठहरे भी थे। ऐसी मान्यता है कि यहाँ के स्तूपों में भगवान बुद्ध की अस्थियाँ रखी हैं।



बैद्यनाथ धाम

द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक बाबा बैद्यनाथ धाम है। देवघर मंदिर के बारे में कथा है कि एक रात में स्वयं विश्वकर्मा ने उसे बनाया था। देवघर शिवलिंग की कहानी शिव पुराण में सुनने को मिलती है... रावण भगवान शिव का बहुत बड़ा भक्त था... उसने बहुत कठिन तपस्या की और एक-एक करके अपने मस्तक भगवान शिव को अर्पित कर दिए... उसकी इस तपस्या से शंकर भगवान बहुत प्रसन्न हुए और उसके दसों मस्तक वापस ठीक कर दिए... यहाँ वैद्य की तरह शंकर भगवान ने उसके सर जोड़े इसलिए उन्हें भगवान वैद्यनाथ कहा गया। रावण ने वरदान माँगा कि आप मेरे यहाँ लंका में चलकर रहिये। भगवान शंकर ने कहा तथास्तु, लेकिन तुम यहाँ से मुझे लेकर चलोगे तो जहाँ जमीन पर रखोगे मैं वहीं स्थापित हो जाऊँगा। तुम मुझे फिर वहां से कहीं और नहीं जे जा सकोगे। रावण खुशी-खुशी शिवलिंग लेकर लंका की ओर चला।

यह समाचार जानते ही देवताओं में खलबली मच गई, अगर भगवान शिव लंका में स्थापित हो जायेंगे तो लंका अभेद्य हो जायेगी और रावण को कोई भी नहीं हरा सकेगा। इन्द्र को अपना आसन डोलता नज़र आया (हमेशा की तरह) सब विष्णु भगवान के पास पहुंचे कि हे प्रभो अब आप ही हमारी रक्षा कर सकते हैं। भोले नाथ तो भोले हैं उन्होंने रावण को वरदान दे दिया है और वो शिवलिंग लेकर लंका की तरफ प्रस्थान कर चुका है। विष्णु भगवान ने देवताओं को चिंतामुक्त होने को कहा और वरुण देव को आदेश दिया कि वो रावण के पेट में प्रवेश कर जाएँ। और विष्णु भगवान एक ब्राह्मण का वेश धारण करके धरती पर चले आए। जैसे ही वरुण देव रावण के पेट में घुसे रावण को बड़ी तीव्र लघुशंका लगी, लघुशंका करने के पहले रावण को शिवलिंग किसी के हाथ में देना था, तभी वहां से ब्राह्मण वेश में विष्णु भगवान गुजरे रावण ने उन्हें थोड़ी देर शिवलिंग पकड़ने का आग्रह किया और वह खुद लघुशंका करने चला गया... पर उसके पेट में तो वरुण देव घुसे हुए थे... बहुत देर होने से ब्राह्मण ने शिवलिंग को नीचे रख दिया। जैसे ही शिवलिंग नीचे स्थापित हुआ वरुण देव रावण के पेट से निकल आए।



रावण जब ब्राह्मण को देखने आया तो देखा कि शिवलिंग जमीन पर रखा हुआ है और ब्राह्मण जा चुका है... उसने शिवलिंग उठाने की कोशिश की लेकिन वरदान देते वक्त शिवजी ने कहा था कि शिवलिंग जहाँ रख दोगे वही स्थापित हो जाऊँगा। आखिर में गुस्सा होकर रावण ने शिवलिंग पर मुष्टि प्रहार किया जिससे वह जमीन में धंस गया। फिर बाद में रावण ने क्षमा माँगी... और कहते हैं वह रोज़ लंका से शिव पूजा के लिए आता था।

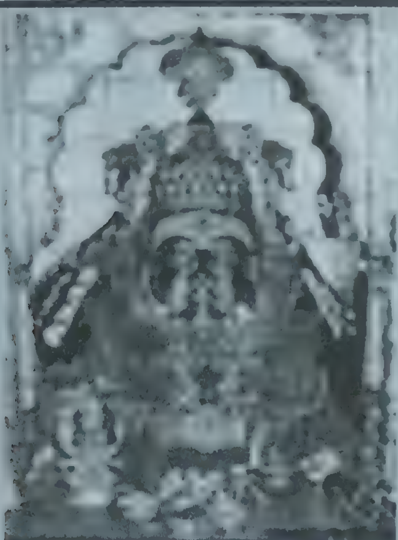
जिस जगह ब्राह्मण ने शिवलिंग रखा वहीं आज शंकर भगवान का मंदिर है जिसे बैद्यनाथ धाम कहते हैं।





पावापुरी

पावापुरी तीर्थ धाम का निर्माण एक जैन परिवार संघवी पूनमचन्द धन्नाजी बाफना द्वारा करवाया गया था। यहाँ पर श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी की 69 इंच की मुख्य मूर्ति स्थापित है। पावापुरी धाम का प्रमुख आकर्षण मंदिर का मुख्य द्वार है, जिसे तोरण द्वार कहा जाता है। यह द्वार 78 फुट ऊँचा है। मुख्य मंदिर के सम्मुख चार छोटे मंदिर हैं, जिनमें ओसियां माता, पद्मावती, भैरव और अम्बिका माता विराजमान हैं। मंदिर निर्माण में राजस्थान के धौलपुर और मकराना के लाल बालू पत्थर और संगमरमर का इस्तेमाल किया गया है। मंदिर का शिखर भारतीय वास्तुकला की उत्कृष्टता को दर्शाता है। मंदिर परिसर जिस दीवार से घिरा हुआ है, उसमें बने गोखलों की सुन्दरता देखते ही बनती है। मंदिर की मुख्य मूर्ति अष्ट प्रतिहारों और पाँच तीर्थंकर राज से घिरी हुई और एक कुर्सी पर स्थापित है। इसके चारों ओर हाथी, यक्ष आदि उकेरित कर सुंदर नक्काशी की गई है। मंदिर परिसर में ही गौशाला का निर्माण भी किया गया है, जहाँ बेहतरीन वातावरण में गायों को रखा जाता है। परिसर में ही भोजनशाला, संतों के लिए विश्राम गृह और जल संरक्षण के लिए एक एनिकट का निर्माण भी किया गया है। मंदिर परिसर में बने बाग और वृक्षों की हरियाली वातावरण को और भी सुरम्य बना देती है।



अम्बा देवी मंदिर

महाराष्ट्र राज्य के नागपुर जिले से 155 कि.मी. दूरी पर स्थित अमरावती का अम्बा देवी मंदिर देश के ख्यातनाम देवी मंदिरों में से एक है। एक किंवदंती के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण रूकमणी का अपहरण करके शादी करने के बाद इस मंदिर में प्रार्थना करने के लिए आये थे।



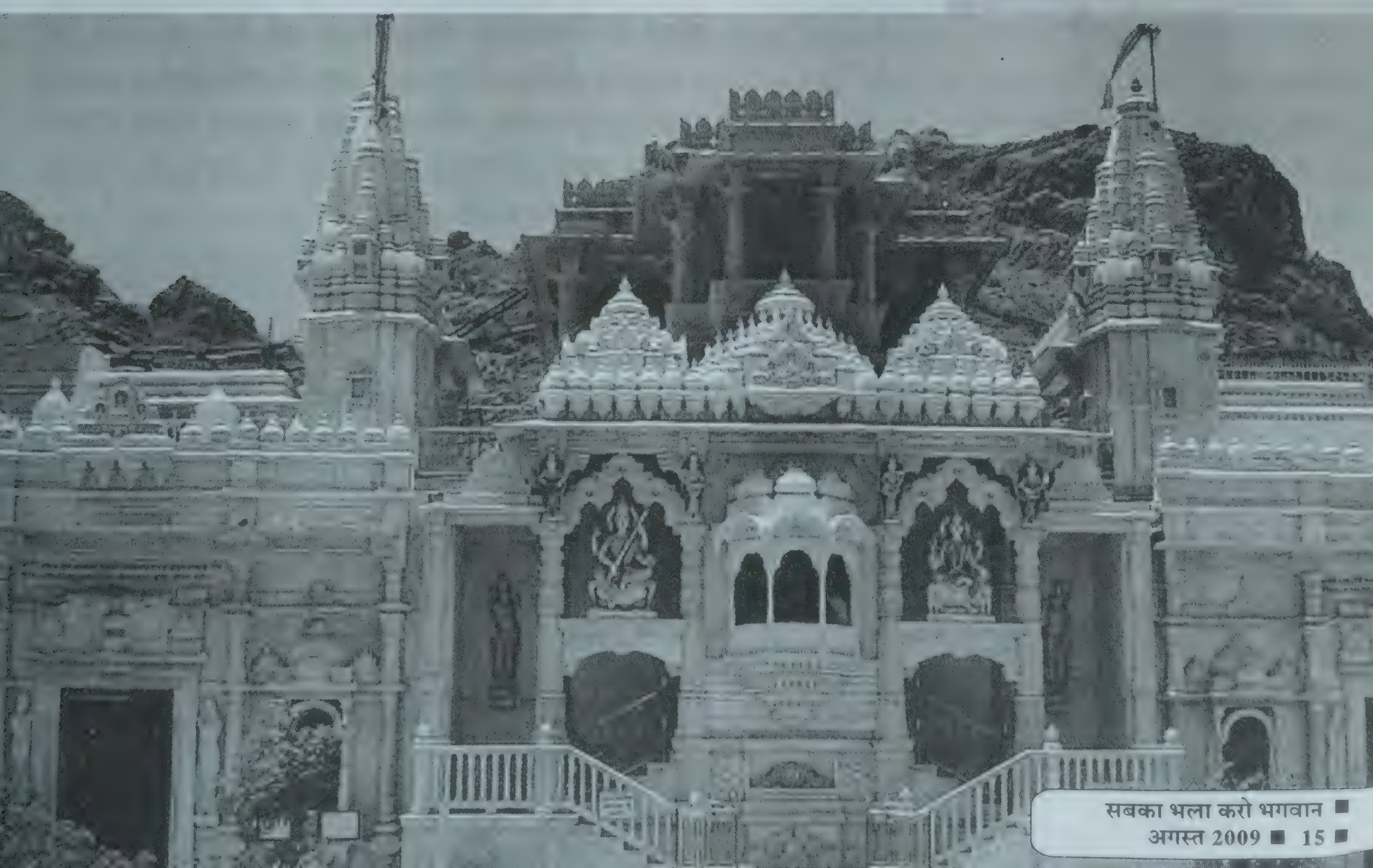
नाकोड़ा का पार्श्वनाथ मंदिर



जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान का यह मंदिर बाड़मेर में नाकोड़ा में स्थापित है। इस मंदिर का निर्माण माण्डलिक परिवार द्वारा 1458 ई. में करवाया गया था। यह मंदिर भू सतह से 1500 फिट ऊँची पहाड़ी पर स्थित है तथा भारत के मुख्य जैन तीर्थ केन्द्रों में से एक है। मंदिर की वास्तुकला अत्यन्त दर्शनीय है। यह तीन मंजिल का एक ऊँचा मंदिर है, जिसकी बाहरी दीवारों पर दिकपाल, विन्ध्यदेवी, यक्षिणियों आदि की मूर्तियाँ लगी हैं, जिनकी तुलना खजुराहो और कोणार्क मंदिर की मूर्तियों से की जा सकती है।

मंदिर में स्थापित काले पत्थर की बनी भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा अत्यन्त आकर्षक और मन को मोह लेने वाली है। मंदिर परिसर में बने अन्य मंदिरों में श्री आदिनाथ भगवान और श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमाएं स्थापित हैं। पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा नीलवर्ण पत्थर में बनी तथा 58 से.मी. लम्बाई की और पद्मासन मुद्रा में स्थापित है तथा अत्यन्त अद्भुत है। श्री शांतिनाथ भगवान का जीवन इतिहास इस मंदिर में मूर्तियों के रूप में दिखाया गया है। मंदिर परिसर में मुख्य मंदिर के पास छोटे-बड़े कई मंदिर हैं। इन मंदिरों में माँ सरस्वती, दादा जिनदत सूरी, आचार्य कीर्तिरत्न सूरी आदि की प्रतिमाऐं भी स्थापित हैं।

मंदिर परिसर के बाहर भैंरवजी महाराज स्थापित हैं, जिनकी बहुत अधिक मान्यता है, जो नाकोड़ा भैरव के नाम से विख्यात हैं। नाकोड़ा भैरव की स्थापना सम्वत् 1511 में आचार्य कीर्तिरत्न द्वारा की गई थी। लोग नाकोड़ा भैरव को एक चमत्कारिक देवता मानते हैं। ऐसा माना जाता है कि नाकोड़ा भैरव की स्थापना के बाद यहाँ की ख्याति में बहुत वृद्धि हुई है।



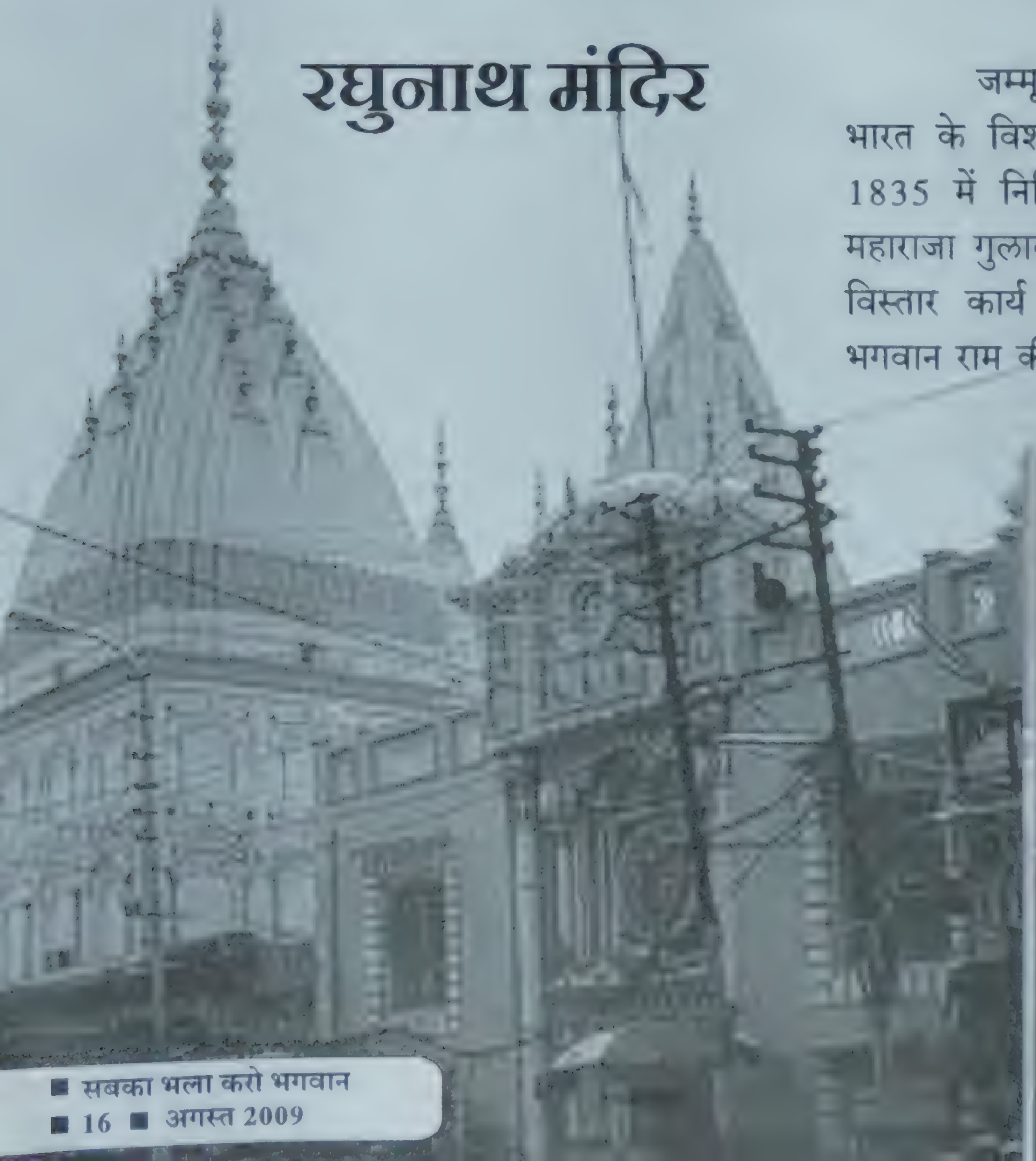



शंकराचार्य मंदिर

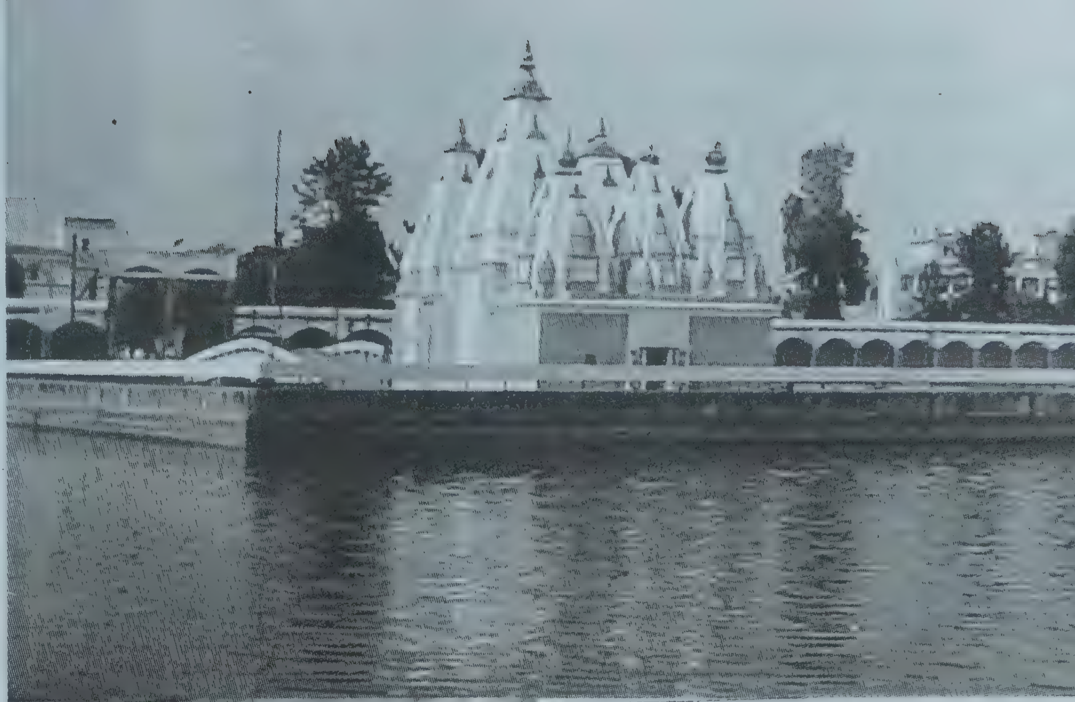
श्रीनगर जिले में एक पहाड़ी पर शहर की सतह से 1100 फुट की ऊँचाई पर शंकराचार्य मंदिर स्थित है। इसका निर्माण 371 ई. पूर्व में किया गया था। महान् दार्शनिक शंकराचार्य सनातन धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए कश्मीर आये थे। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और कश्मीर घाटी का सबसे पुराना मंदिर माना जाता है। कालान्तर में कई बार यह मंदिर क्षतिग्रस्त हुआ और इसका पुनर्निर्माण किया गया। यह मंदिर वास्तुशिल्प की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

रघुनाथ मंदिर

जम्मू-कश्मीर स्थित रघुनाथ मंदिर परिसर उत्तर भारत के विशालतम मंदिरों में से एक है। यह मंदिर वर्ष 1835 में निर्मित किया गया था, जिसका वर्ष 1860 में महाराजा गुलाबसिंह और उनके बेटे महाराजा रणवीर सिंह ने विस्तार कार्य करवाया। इस मंदिर में विष्णु के अवतार भगवान राम की प्रतिमा स्थापित है।




कुरुक्षेत्र



हरियाणा राज्य का प्रमुख जिला-कुरुक्षेत्र। इस एतिहासिक जगह पर महाभारत की लड़ाई हुई थी और भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश यहीं पर ज्योतिसर नामक स्थान पर दिया था। पौराणिक महत्व के स्थान कुरुक्षेत्र का वर्णन ऋग्वेद और यजुर्वेद में भी आता है। यहाँ की पौराणिक नदी सरस्वती का भी अत्यन्त महत्व है। अनेक पुराणों, स्मृतियों और महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत में इसका विस्तृत वर्णन किया गया है। कुरुक्षेत्र की पौराणिक सीमा 48 कोस मानी गई है, जिसमें कुरुक्षेत्र के अतिरिक्त कैथल, करनाल, पानीपत और जिन्द का क्षेत्र शामिल है। कुरुक्षेत्र के प्रमुख तीर्थ स्थानों में ब्रह्म सरोवर, सन्निहत सरोवर, भद्रकाली मंदिर, ज्योतिसर और पिहोवा शामिल हैं। 48 कोस की परिक्रमा भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है।





भगवान विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण की जन्म स्थली ब्रजभूमि मथुरा सहज ही हिन्दू भक्तों को अपनी ओर आकर्षित करती है। ऐसा प्रतीत होता है मानों भगवान कृष्ण की मुरली की स्वरलहरी आज भी यहाँ के वातावरण में गूँज रही है। यमुना नदी के किनारे बसे इस छोटे से शहर के पास ही वृन्दावन स्थित है, जहाँ कृष्ण ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष बिताये थे। प्रकृति की मनोहर छटा के साथ यमुना के किनारे स्थित धनुषाकार घाट और नदी में बहता कल-कल जल, क्षेत्र में बने विभिन्न मंदिर इस पावन स्थली को अनुपम रूप प्रदान करते हैं। मथुरा के पास ही स्थित अन्य पावन स्थलियाँ जैसे वृन्दावन, गोवर्धन, कुसुम सरोवर, बरसाना और नन्दगाँव इसकी शोभा का विस्तार करते हैं। राधा दामोदर जी का मंदिर, प्राचीन गोविन्द देव जी का मंदिर, मथुराधीश का मंदिर यहाँ के प्रमुख मंदिरों में से एक हैं। भगवान कृष्ण की इस पावन स्थली का महत्व जन्माष्टमी और होली जैसे पर्वों पर कई गुणा बढ़ जाता है। इतिहास के आईने में देखने से पता चलता है कि इस शहर की स्थापना पाँचवीं शताब्दी ई. पूर्व बुद्ध के समय के दौरान की गई थी। कुषाणों के शासन के दौरान इस नगरी में अपना स्वर्णिम समय देखा था।

मथुरा





राम और सीता

पाकिस्तान का कराची शहर. यहां शहर के बीचों-बीच आरामबाग के पीछे काफी पुराना, छोटा-सा और गिरती-पड़ती हालत में खड़ा शिव मंदिर है. हफ्ते में छह दिन यह बंद रहता है, मंदिर के बाहर खड़े रेहड़ी वाले की मानें तो 'यह सोमवार की शाम को बस थोड़ी देर के लिए खुलता है.' नाम न छापने की शर्त पर उसका कहना था. 'मैं यहां पिछले 18 सालों से रेहड़ी लगा रहा हूँ और मैंने इसे सोमवार की शाम को ही खुलते देखा है. हफ्ते के बाकी इसका दरवाजा बंद रहता है.'

शिव मंदिर में लगे छोटे-से शिलापट्ट पर सिंधी भाषा में लिखा है, 'इस मंदिर का निर्माण श्रीमती हाजीबाई ने अपने पति सेठ ओची राम मंगतराम की याद में करवाया था.' यह मंदिर कब बना, इसका उस शिलापट्ट में कोई उल्लेख नहीं है. लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि इसका निर्माण काफी पहले हुआ था. आज भी इस मंदिर की कराची में बहुत मान्यता है. वहां रहने वाले हिंदू अक्सर इस मंदिर में शीश नवाते हैं. मंदिर की देखभाल करने वाले पेशे से व्यापारी गिरधारी असुदोमल लखवानी कहते हैं, 'एक समय था, जब यह काफी बड़ा मंदिर हुआ करता था, लेकिन 1947 में देश के हिस्से पर लोगों ने अतिक्रमण कर लिया. अफसोस जताते हुए उन्होंने कहा, 'विभाजन के पहले कराची में 456 मंदिर हुआ करते थे. सबमें पूजा-पाठ होता था. आज बस 20-25 में ही पूजा होती. मुझे यह देखकर काफी तकलीफ होती है, लेकिन मैं क्या कर सकता हूं. इसके लिए तो सबको मिलकर प्रयास करना होगा. मैं यह बात पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि अगर सभी लोगों ने प्रयास किया तो निश्चित रूप से उसका अच्छा नतीजा निकलेगा.'

सिंध पुरावशेष (एंटीक्विटीज) विभाग के सचिव कलीमुल्लाह लाशारी कहते हैं, '1947 में देश के विभाजन से पहले आरामबाग को रामबाग के नाम से जाना जाता था. तब यहां बहुत से मंदिर हुआ करते थे. मंदिर एक बागीचे में बनाए गए थे. ऐसी मान्यता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम और सीता ने यहाँ एक रात गुजारी थी. यह उस समय की बात है, जब वनवास के रूप में 14 साल जंगल में बिताने के बाद धन्यवाद ज्ञापित करने के लिए राम हिंगलाज जा रहे थे.

उन्होंने कहा, 'बीसवीं सदी तक यह इलाका रामबाग कहलाता था. राम यहीं बागीचे में रुके थे. उस समय यहां बहुत से पेड़-पौधे थे. पानी की भी कोई कमी नहीं थी. 1947 में आरामबाग नाम देकर इसे शरणार्थी शिविर में तब्दील कर दिया गया. यह हमारे निगम प्रशासन की नाकामी है कि वे इसकी सही ढंग से देखभाल नहीं कर सके.' विभाजन के पूर्व पाकिस्तान का कोई अस्तित्व नहीं था. तब पूरा भारतवर्ष एक हुआ करता था. हिंदू देवी-देवताओं की पूजा हर जगह हुआ करती थी. मंदिरों में भी भारी भीड़ होती थी. तीज त्योहारों पर तो मंदिरों में खासी चहल-पहल रहती थी. लेकिन विभाजन के बाद सब कुछ बदल गया.

लोककथाओं और परंपराओं का हवाला देते हुए जाने-माने वास्तुविद एवं नगर नियोजक आरिफ हसन कहते हैं, 'बलूचिस्तान स्थित अति प्राचीन हिंगलाज मंदिर जाते समय राम और उनकी पत्नी सीता ने यहां एक रात गुजारी थी. कराची में क्लिफटन स्थित कोठारी परेड के पास वाला महादेव मंदिर इस धारणा की पुष्टि करता है कि प्राचीन काल में भी कराची का अस्तित्व था.' विष्णु के सातवें अवतार होने के साथ-साथ राम हिंदुओं के सबसे पवित्र महाकाव्य रामायण के नायक हैं। हिन्दू का शायद ही कोई घर होगा, जहां राम की पूजा न होती हो. सही कहा जाए तो हिंदू जनमानस में राम इस कदर समाए हुए हैं कि उनके बिना तमाम लोग जीवन की कल्पना तक नहीं कर पाते.



हाँ आराम किया

लाशारी कहते हैं, 'आरामबाग में आज भी कुछ मंदिर हैं, इस वजह से वह विरासत स्थल है. इसे हर हाल में सुरक्षित रखा जाना चाहिए था. हमने इसकी शक्लो-सूरत बदल दी. इसी वजह से इसकी महत्ता कम हो गई. अगर हमने रामबाग के कुओं और मंदिरों को बचाए रखा होता तो आज यह महत्वपूर्ण विरासत स्थल होता.'

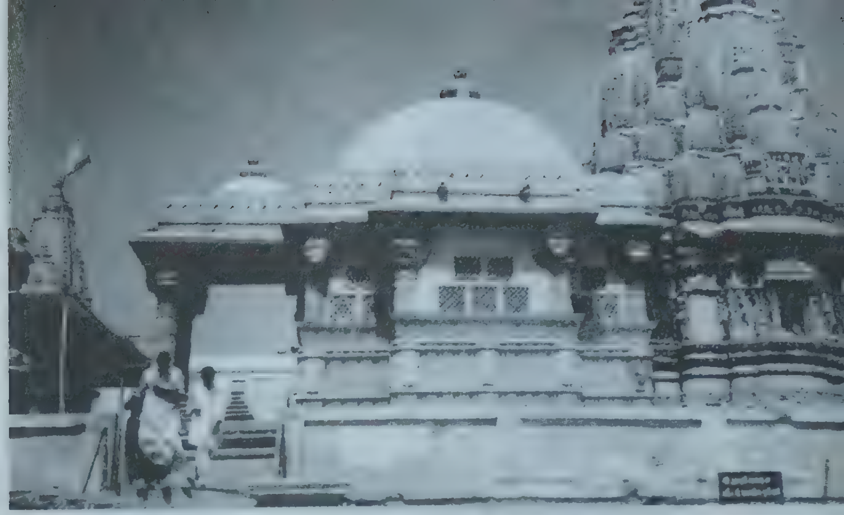
उन्होंने कहा, हमारी सरकार ने भी इस दिशा में सोचने की जरूरत नहीं समझी. प्रमुख वास्तुविद और बुद्धिजीवी यासमीन चीमा के मुताबिक 'रामबाग नौ एकड़ में फैला हुआ हिंदुओं का पवित्र उपवन था. इसमें तीन कुंड, रामचंद्र मंदिर और बहुत से कुए थे. बाद में उन कुओं से बर्तानिया सैनिक शिविरों और छावनी इलाके में पानी की आपूर्ति की जाने लगी.' हसन की माने तो हिंदू परंपरा में जिन सात पवित्रतम स्थानों का जिक्र है, उनमें हिंगलाज भी शामिल है. इसलिए कोई इनसे इतर नहीं जा सकता. सच्चाई यह है कि राम और सीता कराची के महादेव मंदिर में गए और बाग में उन्होंने रात गुजारी. इसी वजह से इसे रामबाग के तौर पर जाना गया. उसके बाद तो रामबाग तीर्थ स्थल बन गया. बड़ी संख्या में लोग यहां मत्था टेकने आने लगे. उनके मन में इस मंदिर के प्रति जबरदस्त आस्था थी, हसन ने कहा, 'यूनानी किताबों में कराची को राम्या बताया गया है.' जाने-माने सरंक्षणवादी वास्तुविद और नगर नियोजक यास्मीन लारी कहते हैं, 'आर्टिलरी मैदान क्वार्टर दरअसल रामबाग क्वार्टर थे. वहां पहले पानी के तीन कुंड हुआ करते थे. इसमें रामबाग सबसे अधिक प्रसिद्ध था. इसी वजह से क्वार्टर का नाम रामबाग पड़ा.' लारी कहते हैं, रामबाग कुंड नौ एकड़ में फैला हुआ था, इसके चारों ओर बहुत से मंदिर, पेड़-पौधे और कुएं थे. यहां लोगों की भारी भीड़ जुटती थी. ये कुएं दरअसल कुंड में ही थे. आसपास पाँच और कुएं थे. इसके अलावा उत्तर दिशा में पाँच एकड़ के एक अहाते में 10 और कुएं थे. कुंड के चारों किनारों पर चार मंदिर भी थे.

जब तक है दुनिया, जलता रहेगा दीप

पाकिस्तान के सिंध प्रांत में एक मंदिर में पिछले डेढ़ सौ सालों से एक दीप लगातार जल रहा है. यहां के लोगों का मानना है कि जब तक दुनिया कायम है, तब तक दीप जलता रहेगा. हैदराबाद (पाकिस्तान) से करीब 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित टंडो अल्लाहयार शहर के श्रीराम देव मंदिर में यह दीप रखा हुआ है. बताते हैं कोई डेढ़ सौ साल पहले यहां के एक स्थानीय निवासी रूपचंद खत्री को कोई औलाद नहीं हो रही थी तो वह राजस्थान के रुणिचा शहर के श्रीराम मंदिर गए. मंदिर में उन्होंने प्रार्थना की और उसके बाद उन्हें संतान हो गई. रूपचंद जी उस यात्रा के दौरान वहां के एक मंदिर से एक जलता हुआ दीप भी लाए थे. हैदराबाद आकर उन्होंने यह मंदिर आबाद कर दिया और उसका नाम भी श्रीरामदेव मंदिर रख दिया. मंदिर आज तक आबाद है और दीप भी जल रहा है. रूपचंद के पुरखों ने इसे कभी भी बुझने नहीं दिया. इस मंदिर में सितंबर के महीने में हर साल चार दिन के उत्सव का आयोजन होता है. पाकिस्तान के विभिन्न शहरों के साथ-साथ भारत से भी इस दीप के दर्शन करने के लिए यात्री पैदल पहुँचते हैं. सिंध प्रांत के सभी मंदिरों में श्रीरामदेव मंदिर अकेला ऐसा मंदिर है, जहां हर समय श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है. हर महीने की नौ तारीख को यहां उत्सव जैसा माहौल होता है. भारत में जब बाबरी मस्जिद विध्वंस हुआ था, तब लोगों ने गुस्से में आकर इस मंदिर को गिरा दिया था. बताते हैं कि मंदिर पूरी तरह नष्ट हो गया था, लेकिन दीपक को कोई आँच नहीं आई थी. लोग इस चमत्कार से कम नहीं मानते हैं. बताते चलें कि पहले यह मंदिर 20 वर्ग फीट में था, लेकिन आज यह 100 वर्ग फीट में फैला हुआ है.



द्वारिका



भारत के पश्चिम में समुद्र तट पर हजारों वर्ष पूर्व भगवान कृष्ण द्वारा बनाई गई नगरी-द्वारका, जिस पर राज कर वे भारत की राजनीति के केन्द्र बने। महाभारत युद्ध में धर्म का साथ देकर पाण्डवों को विजय वरण कराना, शिशुपाल और दुर्योधन जैसे दुराचारियों का नाश उन्होंने यहीं रहते हुए किया। द्वारका की मान्यता चार धामों में से एक के रूप में है। धार्मिक पुस्तकों में वर्णित सप्त पुरियों में से यह एक गिनी जाती है।

द्वारका आज एक छोटा सा कस्बा है। इसके चारों ओर पुरातिहासिक चारदीवारी बनी हुई है और भीतर कई मन्दिर विद्यमान हैं। द्वारका के दक्षिण में गोमती तालाब है, जिसके नाम पर द्वारका को गोमती द्वारका भी कहते हैं। यहाँ नौ घाट बने हैं। यहीं एक कुण्ड है जिसे निष्पाप कुण्ड कहा जाता है। यहाँ पुरखों का पिण्ड दान भी किया जाता है। यहाँ प्रमुख और बड़ा मन्दिर है - रणछोड़ जी मन्दिर। यहाँ भगवान कृष्ण की काले पत्थर की बनी प्रतिमा चाँदी के सिंहासन पर विराजमान है। यहाँ मन्दिर एक सौ चालीस फुट ऊँचा है। पास ही दुर्वासा जी और त्रिविक्रम मन्दिर भी खासे प्रसिद्ध हैं। कुशेश्वर भगवान का मन्दिर भी ख्यातनाम है। यहीं अम्बा जी और देवकी माता का मन्दिर भी है। पास ही राधा, रुक्मिणी, सत्यभामा और जाम्बवती के भी छोटे-छोटे मन्दिर हैं।

शंकराचार्य द्वारा देश में बनवाये चार मठों में से एक यहीं पर है, जिसे शारदा मठ कहते हैं। यहाँ बने मंदिरों में सांवलिया जी का मन्दिर भी काफी प्रसिद्ध है। पास ही बेट द्वारका भी है, जहाँ भगवान कृष्ण ने अपने प्यारे भगत नरसी की हुण्डी भरी थी। यहीं भगवान श्री कृष्ण और रुक्मिणी, राधा के महल भी हैं। यहाँ कई तालाब हैं - रणछोड़ तालाब, रत्न तालाब, कचौरी तालाब और शंख तालाब। मुरली मनोहर, नीलकण्ठ महादेव, रामचन्द्र जी और शंखनारायण के मन्दिर भी हैं।

बाण तीर्थ भी एक दर्शनीय स्थान है। यह वही जगह है, जहाँ एक भील ने भगवान कृष्ण के पैर में तीर मारा था और वे परमधाम को प्राप्त हुए थे। यहीं पर एक भारी मेला भरता है।

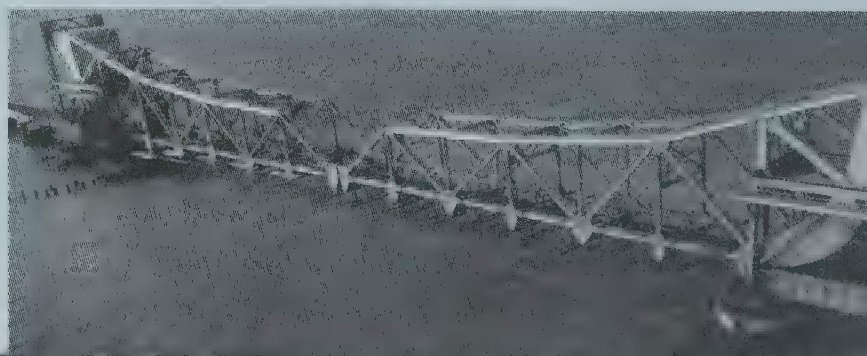
थोड़ी ही दूर यादव स्थान है, जहाँ यादव कुल आपस में लड़-भिड़ कर समाप्त हुआ था।

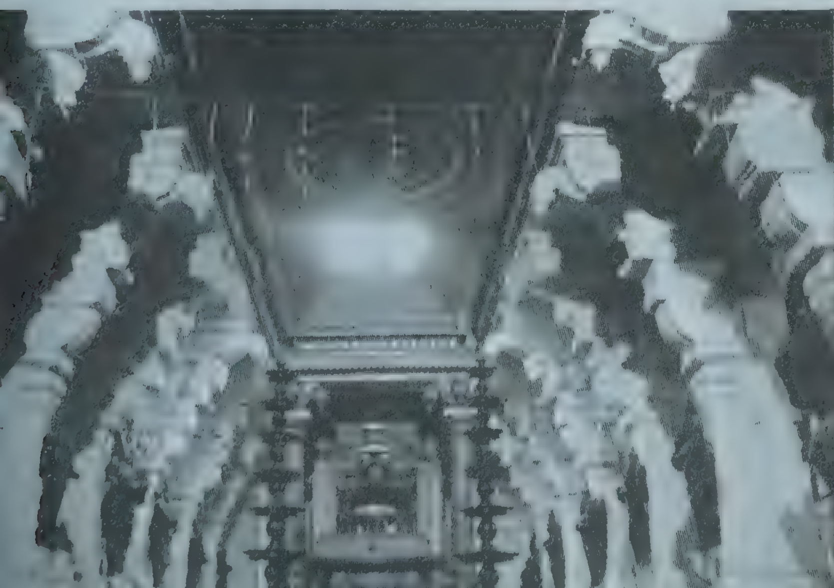


रामेश्वरम



हिन्दुओं के पवित्र तीर्थ रामेश्वरम की दक्षिण में वही मान्यता है जो उत्तर में काशी की। चेन्नई से दक्षिण पूर्व में सवा चार सौ मील की दूरी पर स्थित रामेश्वरम का निर्माण लंका के राजा पराक्रमबाहु ने कराया था, जिसका पुनरुद्धार कालान्तर में रामनाथपुरम के राजा उडैयान सेतुपति द्वारा करवाया गया। रामेश्वर का मूल मन्दिर द्रविड़ वास्तुशिल्प का सर्वश्रेष्ठ नमूना है। मूलतः रामेश्वरम एक टापू है। हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी इसे चारों ओर से घेरते हैं। मुख्य भूमि और रामेश्वरम को जोड़ता हुआ यहाँ पत्थर का एक प्राचीन पुल है, जिस पर बाद में अंग्रेजों द्वारा नया रेल पुल निर्मित किया गया। टापू के दक्षिण में धनुषकोटि नाम का तीर्थ है। यह वह जगह है जहाँ भगवान श्रीराम ने श्रीलंका पर चढ़ाई के लिए सेतु बाँधा था। यहीं वह गंधमादन पर्वत भी है, जहाँ चढ़कर हनुमान जी ने समुद्र को लाँघने के लिए छलाँग मारी थी। इस पर्वत पर श्रीराम के चरण चिन्हों का एक मन्दिर भी है। इस टापू का हर हिस्सा किसी न किसी प्रकार भगवान राम से जुड़ा हुआ है। माता सीता जी के अग्नि प्रवेश का स्थान भी यहीं पर है। भगवान राम ने रावण को मारने के बाद लगे ब्रह्महत्या के पाप को धोने के लिए यहीं शिवलिंग स्थापित किया था। यहाँ अन्य मन्दिरों में माता पार्वती का पर्वतवर्द्धिनी मन्दिर और विशालाक्षी मन्दिर प्रसिद्ध है। भगवान विष्णु का सेतु माधव मन्दिर भी है। कोटि तीर्थ नामक तालाब भी है, जिसमें नहाने से शरीर के रोग दूर होते हैं। विल्लूरणि तीर्थ भी दर्शनीय है। यहाँ समुद्र के खारे पानी के बीच में से मीठा जल निकलता है। कहा जाता है राम ने सीता की प्यास बुझाने के लिए धनुष की नोक से खोदकर इसे तैयार किया था। जहाँ विभीषण ने राम की शरण ली थी उस स्थान पर कोछ स्वामी का मन्दिर बना है। रावण वध के बाद यहीं पर राम ने विभीषण का राजतिलक किया था। यहाँ राम, सीता और लक्ष्मण के अलावा विभीषण की मूर्ति भी स्थापित है। रामेश्वर के दक्षिण में प्रसिद्ध तीर्थ कन्याकुमारी स्थित है।







वैशाली



बौद्ध और जैन धर्मावलम्बियों के लिए समान रूप से महत्व रखने वाली वैशाली हिमालयी गंगा क्षेत्र में स्थित है। बौद्ध और जैन धर्म से भी पहले महाभारतकाल से वैशाली का उल्लेख होता आया है। वैशाली के गणतंत्र में भगवान महावीर का जन्म हुआ था। गौतम बुद्ध ने वैशाली में अपना अंतिम उपदेश दिया था और परिनिर्वाण की घोषणा की थी। वर्तमान में यहाँ जापान द्वारा विश्व शांति शिवालय और एक जापानी मंदिर का निर्माण किया गया है।

डेरा बाबा नानक



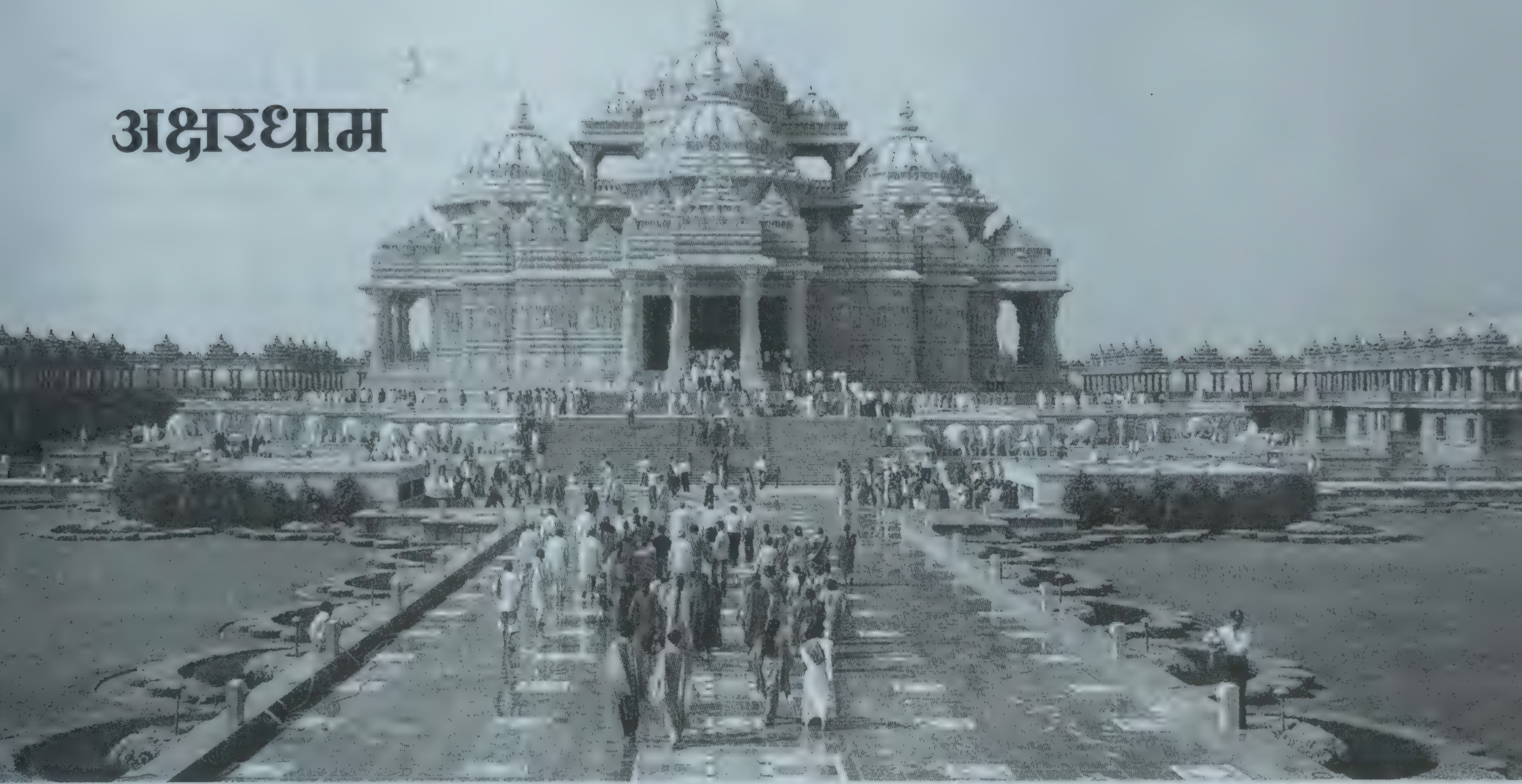
पँजाब राज्य के गुरदासपुर जिले में स्थित–डेरा बाबा नानक। सिखों का एक पवित्र स्थल। यहाँ दो गुरुद्वारे–श्री दरबार साहिब और श्री चोला सहिब हैं। रावी नदी के किनारे स्थित इस पवित्र सिख स्थल पर बड़ी संख्या में तीर्थयात्री आते हैं। यह एक ऐतिहासिक और धरोहर के रूप में संरक्षित एक शहर है। गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब उस स्मृति को जीवित रखने के लिए बनाया गया था, जब 1515 में गुरु नानक यहाँ आये थे। उनके साथ उनकी धर्मपत्नि माता सुलखनी और दो सुपुत्र बाबा श्रीचन्द और बाबा लखमी चंद भी थे। गुरुद्वारा श्री चोला साहिब में गुरु के सरोपों का प्रदर्शन किया गया है।

श्रृंगेरी मठ

श्रृंगेरी नामक यह स्थान कर्नाटक राज्य के चिकमगलूर जिले में स्थित है। यहाँ अद्वेत वेदांत दर्शन के प्रतिपादक आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित पहला मठ है, जिसकी स्थापना तुंगा नदी के तट पर आठवीं सदी में की गई थी। श्रृंगेरी में शिक्षा और ज्ञान की देवी शारदा को समर्पित शारदा अम्बा मंदिर और भाइयों द्वारा स्थापित विद्याशंकर मंदिर हैं। शारदा अम्बा मंदिर का निर्माण चौदहवीं सदी में किया गया था। मूल रूप से काष्ठ निर्मित इस मंदिर को बीसवीं सदी में आग लगने के बाद पारम्परिक दक्षिण भारतीय वास्तुकला में निर्मित किया गया। विद्याशंकर मन्दिर अपने बारह राशीय स्तम्भों के कारण प्रसिद्ध है। यह मन्दिर श्रेष्ठ वास्तुकला का जीता-जागता स्वरूप है। यहाँ के वीरभद्र स्वामी मंदिर, चित्तमक्की मिल्लकार्जुन स्वामी मन्दिर, वेणुगोपाल स्वामी मंदिर, कालाशेश्वर मंदिर, राम्बापुरी मठ, अन्नपूर्णेश्वरी मंदिर, हरिहरपुण, ऋष्यश्रृंग मंदिर भी दर्शनीय हैं।

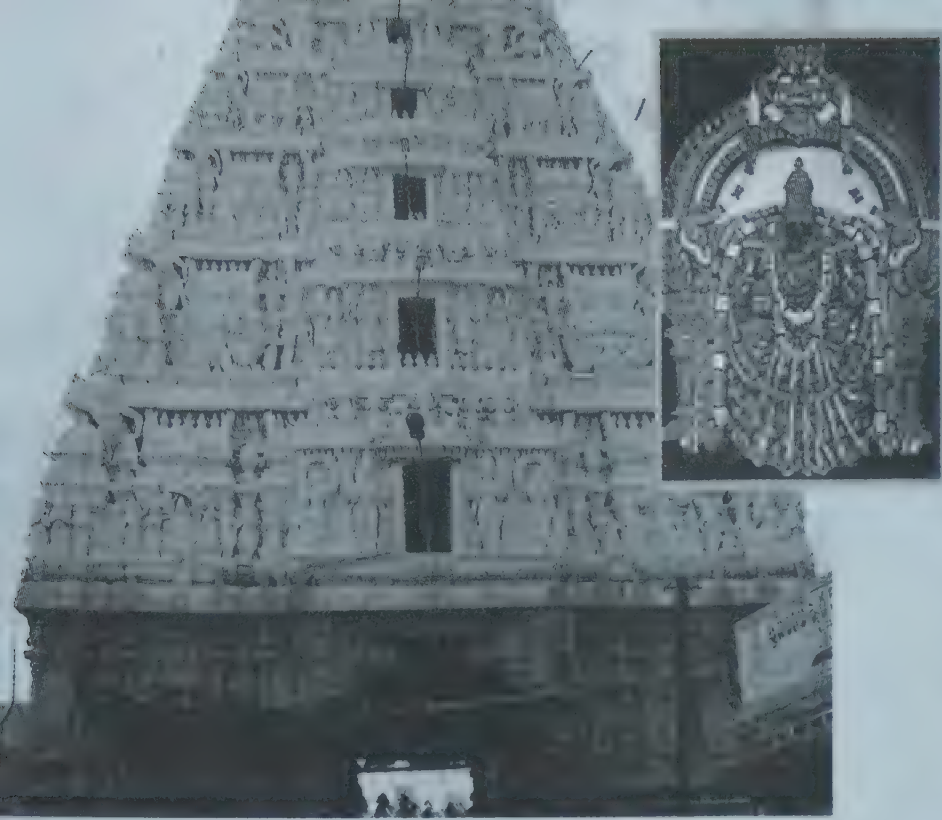


अक्षरधाम



गुजरात की राजधानी–गाँधीनगर। यहीं बना है भगवान स्वामीनारायण का मन्दिर। पत्थर में गढ़ी हुई एक ऐसी सुंदरता, जो चित्ताकर्षक तो है ही, तन–मन को भी अभिभूत कर देती है। अपनी किस्म का अकेला यह मंदिर 23 एकड़ क्षेत्र परिसर में निर्मित है। इसके निर्माण में 6 वर्ष का समय लगा। मुख्य मंदिर में भगवान स्वामीनारायण की सात फुट की प्रतिमा स्थापित है जो स्वर्ण आभा मण्डित है। यह मंदिर 97 उत्कीर्णित स्तम्भों और 220 प्रस्तर आधारों पर टिका हुआ है तथा 57 प्रस्तर प्रवालों और 17 गुम्बदों से युक्त है। मंदिर परिसर में भगवान स्वामीनारायण के जीवन और विचारों को शिल्प और चित्रण के जरिए प्रदर्शित किया गया है। यह मंदिर अध्यात्म और आधुनिकतम तकनीक का अद्भुत मिश्रण है। यहाँ आकर मन को शान्ति तो मिलती ही है, एक सुखद अहसास भी होता है। इस मंदिर की यात्रा व्यक्ति को बहुआयामी अनुभव व अहसास कराती है।





पदमावती मन्दिर

तिरुपति के पास एक छोटा सा शहर है - तिरुचानूर। यहीं स्थापित है देवी पदमावती का भव्य मन्दिर। ऐसा माना जाता है कि देवी पदमावती अपने भक्तों को बहुत जल्द क्षमा कर देती हैं और भरपूर आशीर्वाद भी देती हैं। बारहवीं सदी में स्थापित इस मन्दिर में सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में वरदराजा की प्रतिमा भी स्थापित की गई। यह उल्लेखनीय है कि देवी पदमावती तिरुपति के भगवान वेंकटेश्वर की पत्नी हैं। कमल के दो पुष्पों पर विराजित पदमासन मुद्रा में इनकी प्रतिमा बहुत ही मनोहारी है। तिरुपति की यात्रा करने जाने वाले लोगों को इस मन्दिर के दर्शन अवश्य करने चाहिएं।

हेमकुण्ड साहिब



हिमालय की श्रृंखला में 15200 फीट की ऊँचाई पर ऋषिकेश से बद्रीनाथ मार्ग पर स्थित सिक्खों का प्रसिद्ध गुरुद्वारा हेमकुण्ड साहिब अपनी पारिस्थितिक विशेषता के कारण लोगों का मन मोह लेता है। हेमकुण्ड साहिब जाने के लिए ऋषिकेश से 275 किलोमीटर आगे गोविन्द घाट पहुँचना होता है, जहाँ तक आवागमन के साधन उपलब्ध हैं। यहीं पर आवास वगैरह की व्यवस्था भी है। गोविन्द घाट से 13 किलोमीटर दूर गोविन्द धाम या घंघरिया गाँव है, जहाँ से हेमकुण्ड तक पहुँचने के लिए 6 किलोमीटर की पैदल चढ़ाई करनी होती है। हेमकुण्ड साहिब जाने तक के रास्ते में 3 से 5 किलोमीटर लम्बा 'फूलों की घाटी' नामक एक स्थान पड़ता है, जो यात्रियों को ठिठकने को मजबूर कर देता है। हेमकुण्ड साहिब का गुरुद्वारा और इसकी पृष्ठ भूमि में स्वच्छ निर्मल जल की झील, कुल मिलाकर स्वर्गिक आभा का अहसास कराता है। हेमकुण्ड साहिब जाने के रास्ते में कई ग्लेशियर भी पड़ते हैं, जिन पर पड़ती हुई सूर्य की किरणें अद्‌भुत नजारा प्रस्तुत करती हैं।



यमुनोत्री

उत्तराखण्ड राज्य के उत्तरकाशी जिले का एक और स्थान है - यमुनोत्री। यह भी चार धाम तीर्थ यात्रा स्थलों में से एक है। यहाँ तक पहुँचने के लिए 19 किलोमीटर का रास्ता घोड़े या पालकी से पूरा किया जा सकता है। यह पूरा स्थल पहाड़ी सौन्दर्य और गिरते झरनों की वजह से बहुत ही सुरम्य प्रतीत होता है। कहा जाता है कि यहाँ के मूल मन्दिर का निर्माण टिहरी गढ़वाल के महाराज प्रतापशाह द्वारा करवाया गया था।

गंगोत्री



उत्तराखण्ड राज्य के उत्तरकाशी जिले का एक छोटा सा स्थान है - गंगोत्री। भागीरथी नदी के तट पर बना यह एक हिन्दू तीर्थ स्थल है। गंगोत्री चार धाम तीर्थ यात्रा के स्थलों में से एक है। पवित्र नदी गंगा के उद्‌गम स्थल गोमुख पर गंगोत्री मन्दिर स्थापित है, जहाँ तक जाने के लिए 19 किलोमीटर पैदल चढ़ना होता है। दीवाली पर बन्द होने वाला यह मन्दिर मई माह में दर्शनों के लिए खोला जाता है। हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार जब राजा भागीरथ के पूर्वजों के पापों को दोषमुक्त करने के लिए गंगा ने स्वर्ग से पृथ्वी पर आना स्वीकार किया तब इसी स्थान पर भगवान शिव ने उनके उफनते हुए प्रभाव को झेलते हुए अपनी जटाओं में स्थान दिया था।



जागेश्वर धाम

उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा से 35 किलोमीटर दूर जागेश्वर धाम में लगभग 250 मन्दिर हैं, जिनमें से एक ही स्थान पर छोटे-बड़े 224 मन्दिर स्थित हैं। गुप्त साम्राज्य के दौरान हिमालय की पहाड़ियों के कुमाऊँ क्षेत्र में कत्यूरीरजा ने जागेश्वर मन्दिरों का निर्माण कराया था। मन्दिरों का निर्माण लकड़ी तथा सीमेन्ट की जगह पत्थर की बड़ी-बड़ी स्लेबों से किया गया है। दरवाजों की चौखटें देवी-देवताओं की प्रतिमाओं से अलंकृत हैं। मन्दिरों के निर्माण में ताँबे की चादरों और देवदार की लकड़ी का भी प्रयोग किया गया है। लोक विश्वास और लिंग पुराण के अनुसार जागेश्वर संसार के पालनहार भगवान विष्णु द्वारा स्थापित बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। पुराणों के अनुसार शिवजी तथा सप्तऋषियों ने यहाँ तपस्या की थी।

कात्यायनी शक्तिपीठ

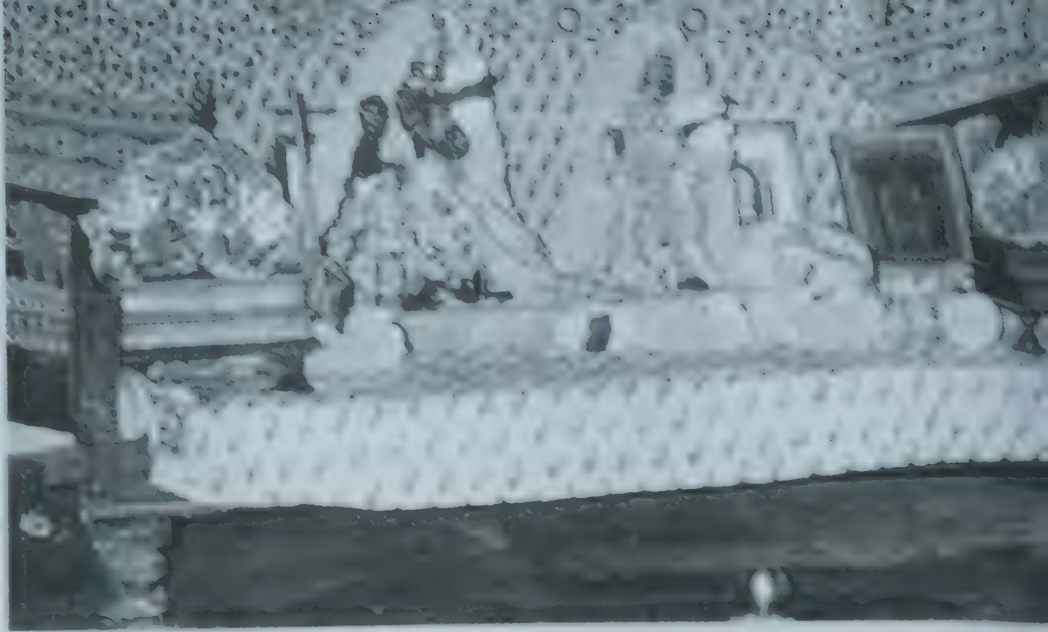
वृन्दावन का प्राचीन कात्यायनी शक्तिपीठ यमुना नदी से कुछ ही दूरी पर एकांत राधाबाग क्षेत्र में स्थित है। सामान्य धारणा यह है कि देवी के शक्तिपीठों की संख्या 51 ही है लेकिन यहाँ के धर्माचार्यों ने बताते हैं कि कुल शक्तिपीठों की संख्या तो 108 है लेकिन अभी तक ज्ञात 51 ही हैं।

धर्मशास्त्रों के अनुसार देवी सती ने जब अपने पिता दक्ष प्रजापति के घर में स्वयं को योगाग्नि में भस्म कर डाला था तो क्रुद्ध होकर भगवान शंकर देवी की मृत देह को लेकर भूमंडल में विचरने लगे। भगवान के इतने उग्र रूप से समूचे लोक में सृष्टि के विनाश का खतरा उत्पन्न हो गया। तब जगत कल्याण के लिए भगवान श्री विष्णु ने अपने चक्र से देवी सती के शरीर को विखंडित किया। इस दौरान देवी के विभिन्न अंग 108 स्थानों पर गिरे और इन्हीं स्थानों पर अब शक्तिपीठ हैं। बाकी 57 शक्तिपीठ अभी भी अज्ञात हैं।



गोपियों ने भगवान श्री कृष्ण को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए कात्यायनी मंदिर में पूजा की थी लेकिन कालांतर में यह पीठ लुप्त हो गई थी। सन 1923 में स्वामी श्री केशवानन्दजी ने इस लुप्त शक्तिपीठ का पता लगाकर इसका पुनरुद्धार कराया।

राधा दामोदर मन्दिर



वृन्दावन का राधा दामोदर मन्दिर ब्रह्म माध्वगौड़ीयसम्प्रदाय का मध्यकालीन ऐतिहासिक मन्दिर है। यह मन्दिर वृन्दावन के सप्त देवालियों में से एक है। यहाँ ठाकुर राधा दामोदर का वह विग्रह विराजित है, जो कि संवत् 1599 (सन् 1942) की माघ शुक्ल दशमी को श्रीलरूपगोस्वामी के सम्मुख श्रीलजीव गोस्वामी के द्वारा नित्य ठाकुर सेवा किए जाने हेतु स्वयं प्रकट हुआ था। इसी दिन इस विग्रह को सर्वप्रथम राधा दामोदर मन्दिर के सिंहासन पर विराजित किया गया था। इस मन्दिर में राधा वृन्दावन चन्द्र का विग्रह, राधा माधव का विग्रह, राधा छैलचिकन का विग्रह एवं ठाकुर जगन्नाथ व गौर निताई के विग्रह विराजित हैं।

इस मन्दिर में वह गिरिराज चरण शिला खण्ड भी मौजूद है, जिसे कि भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीलसनातन गोस्वामी पाद को चकलेश्वर (गोवर्धन) में उस समय दिया था, जब वह वृद्धावस्था के कारण



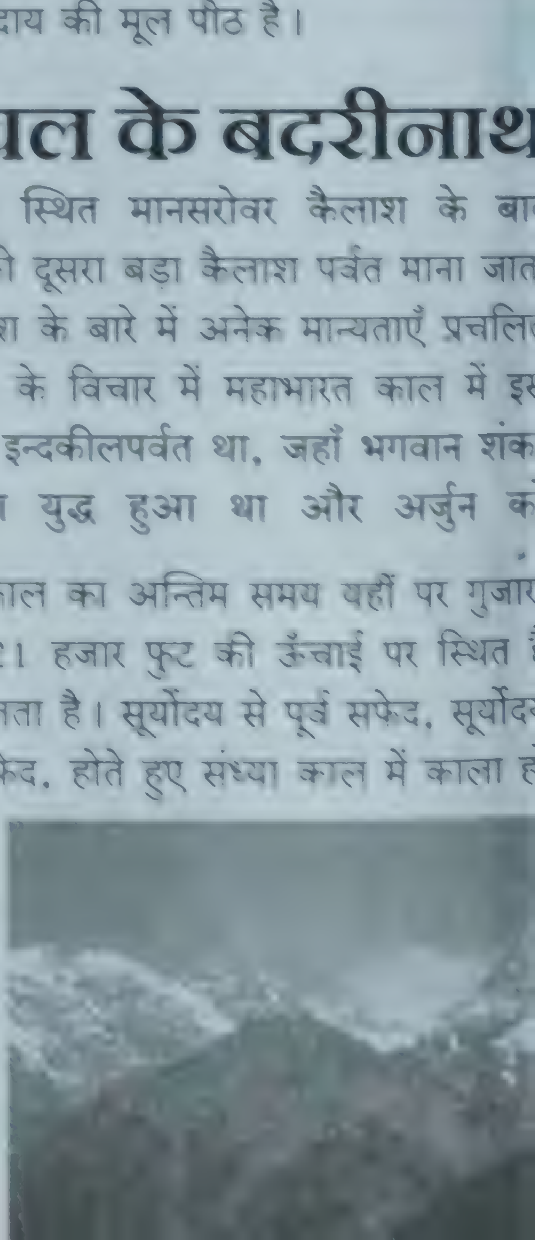
नित्य-प्रति गोवर्धन परिक्रमा कर पाने मे असमर्थ हो गए थे। भगवान श्रीकृष्ण ने सनातन गोस्वामी से कहा था कि इस शिला खण्ड की चार परिक्रमा कर लेने मात्र से उन्हें गोवर्धन की सप्त कोसी परिक्रमा करने का पुण्य फल प्राप्त होगा।

भगवान श्रीकृष्ण द्वारा प्रदत्त इस शिलाखण्ड पर भगवान श्रीकृष्ण का एक चरण चिह्न, उनकी वंशी, लाठी और गाय के एक खुर का चिह्न आज भी मौजूद है। राधा दामोदर मन्दिर श्री मन्माध्वगौडेश्वर सम्प्रदाय की मूल पीठ है।



हिमाचल के बदरीनाथ

तिब्बत स्थित मानसरोवर कैलाश के बाद किन्नर कैलाश को दूसरा बड़ा कैलाश पर्वत माना जाता है। किन्नर कैलाश के बारे में अनेक मान्यताएँ प्रचलित हैं। कुछ विद्वानों के विचार में महाभारत काल में इस कैलाश का नाम इन्दकीलपर्वत था, जहाँ भगवान शंकर और अर्जुन का युद्ध हुआ था और अर्जुन को पासुपातास्त्र की प्राप्ति हुई थी। यह भी मान्यता है कि पाण्डवों ने अपने वनवास काल का अन्तिम समय यहीं पर गुजारा था। किन्नर कैलाश को वाणासुर का कैलाश भी कहा जाता है। यह शिवलिंग 21 हजार फुट की ऊँचाई पर स्थित है और इस शिवलिंग की एक चमत्कारी बात यह है कि दिन में कई बार यह रंग बदलता है। सूर्योदय से पूर्व सफेद, सूर्योदय होने पर पीला, मध्याह्न काल में यह लाल हो जाता है और फिर क्रमशः पीला, सफेद, होते हुए संध्या काल में काला हो जाता है। यह भी मान्यता है कि पाण्डवों ने अपने गुप्तवास के दौरान यहाँ इस पवित्र शिवलिंग की स्थापना करके भगवान शिव की आराधना की थी। यह भी मान्यता है कि किन्नर कैलाश ही वास्तव में स्वर्ग लोक है और यहीं बैठकर इन्द्र अन्य देवताओं पर राज्य करते हैं। किन्नर कैलाश को हिमाचल का बदरीनाथ भी कहा जाता है और इसे रोंक कैसिल के नाम से भी जाना जाता है।





चित्रकूट

विंध्यपर्वत के उत्तर में चित्रकूट धाम एक धार्मिक स्थान है और अपनी प्राकृतिक खूबसूरती के कारण काफी चर्चित है। चित्रकूट पर्वत मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश दोनों राज्यों की सीमाओं को घेरता है। वनवास के दौरान भगवान राम ने अपने भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ सबसे अधिक समय तक यहीं निवास किया था। चित्रकूट गिरि, स्फटिक शिला, भरत कूप, चित्रकूट-वन, गुप्त गोदावरी, मंदाकिनी (पयस्विनी) यहाँ के अन्य दर्शनीय स्थान हैं। ऐसा विश्वास है कि कामद गिरि के दर्शन मात्र से दुख समाप्त हो जाते हैं। इसका एक और नाम कामतानाथ भी है। रामायण और गीतावली में भी चित्रकूट की महिमा बताई गई है। यही वह स्थान है, जहाँ भरत राम से मिलने आते हैं और पूरी दुनिया के सामने अपना आदर्श प्रस्तुत करते हैं। देश में सबसे पहला राष्ट्रीय रामायण मेला चित्रकूट में ही शुरू किया गया था।

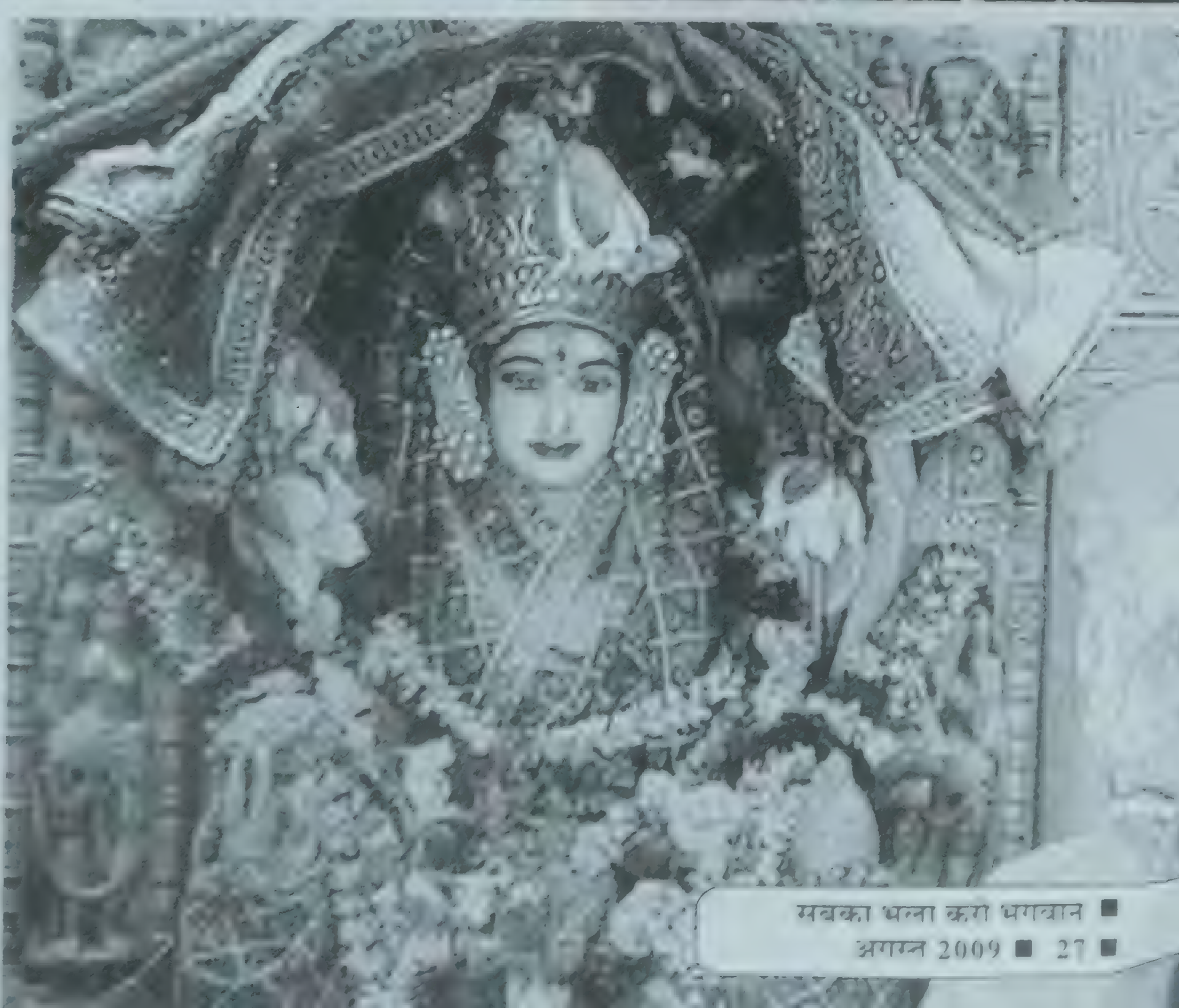
नागचन्द्रेश्वर मन्दिर

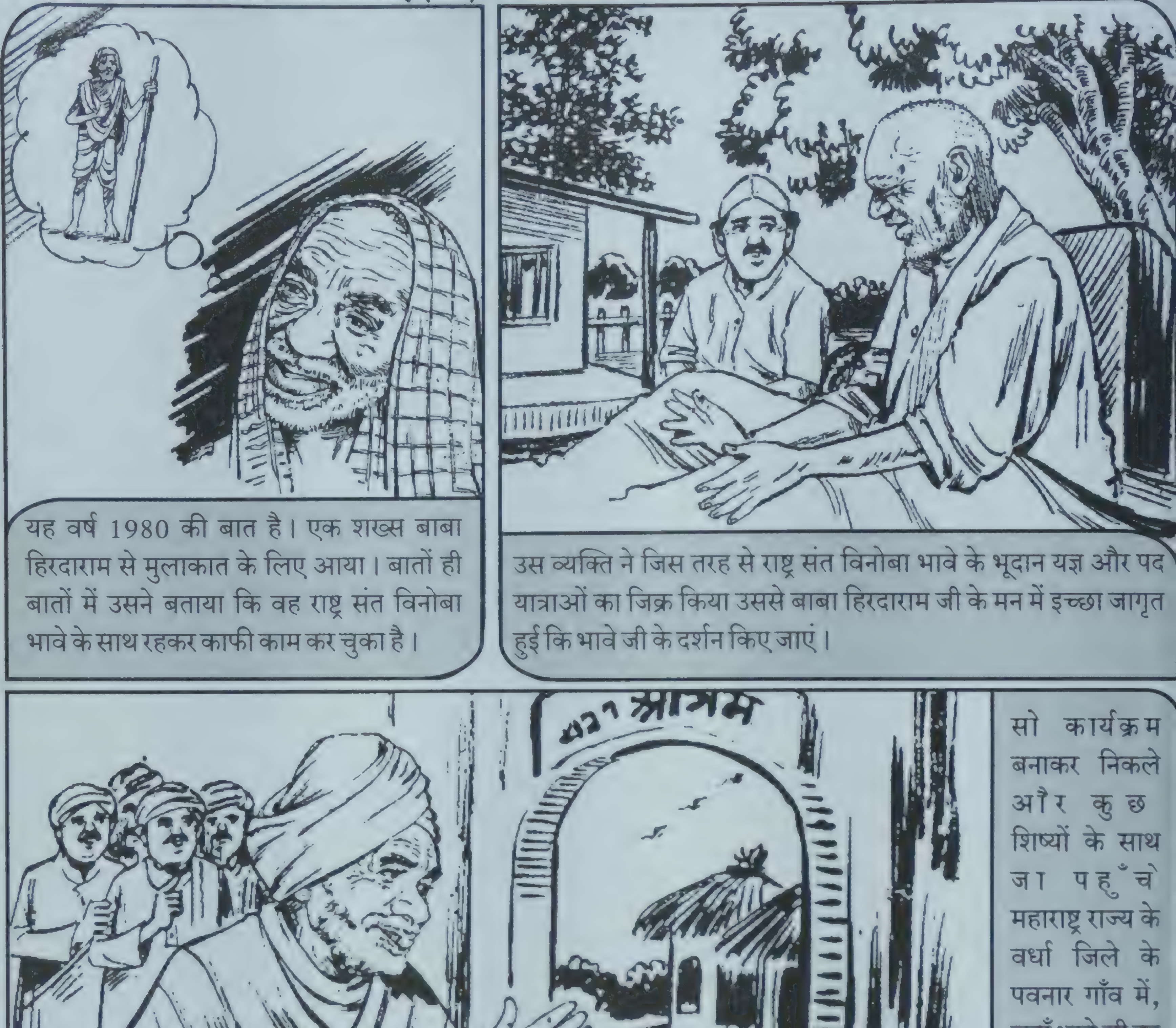


उज्जैन में देश के बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रमुख प्रसिद्ध महाकालेश्वर मन्दिर के शीर्ष पर स्थित नागचन्द्रेश्वर मन्दिर में देवाधिदेव भगवान शिव की एक ऐसी विलक्षण प्रतिमा है, जिसमें वह अपने पूरे परिवार के साथ सर्प सिंहासन पर आसीन हैं। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार सर्प भगवान शिव का कंठाहार और भगवान विष्णु का आसन है लेकिन वह विश्व का संभवतः एकमात्र ऐसा मन्दिर है जहाँ भगवान शिव, माता पार्वती एवं उनके पुत्र गणेश को सर्प सिंहासन पर आसीन दर्शाया गया है। वर्ष में केवल नागपंचमी पर इस मन्दिर के पट 24 घण्टे के लिए खुलते हैं। इस अत्यंत प्राचीन मन्दिर का परमार राजा भोज ने एक हजार और 1050 ईस्वी के बीच पुनर्निर्माण कराया था। 1732 में तत्कालीन ग्वालियर रियासत के राणाजी सिन्धिया ने मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया। प्रतिवर्ष श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की पंचमी के दिन नागपंचमी का पर्व पड़ता है और इस दिन नाग की पूजा की जाती है।

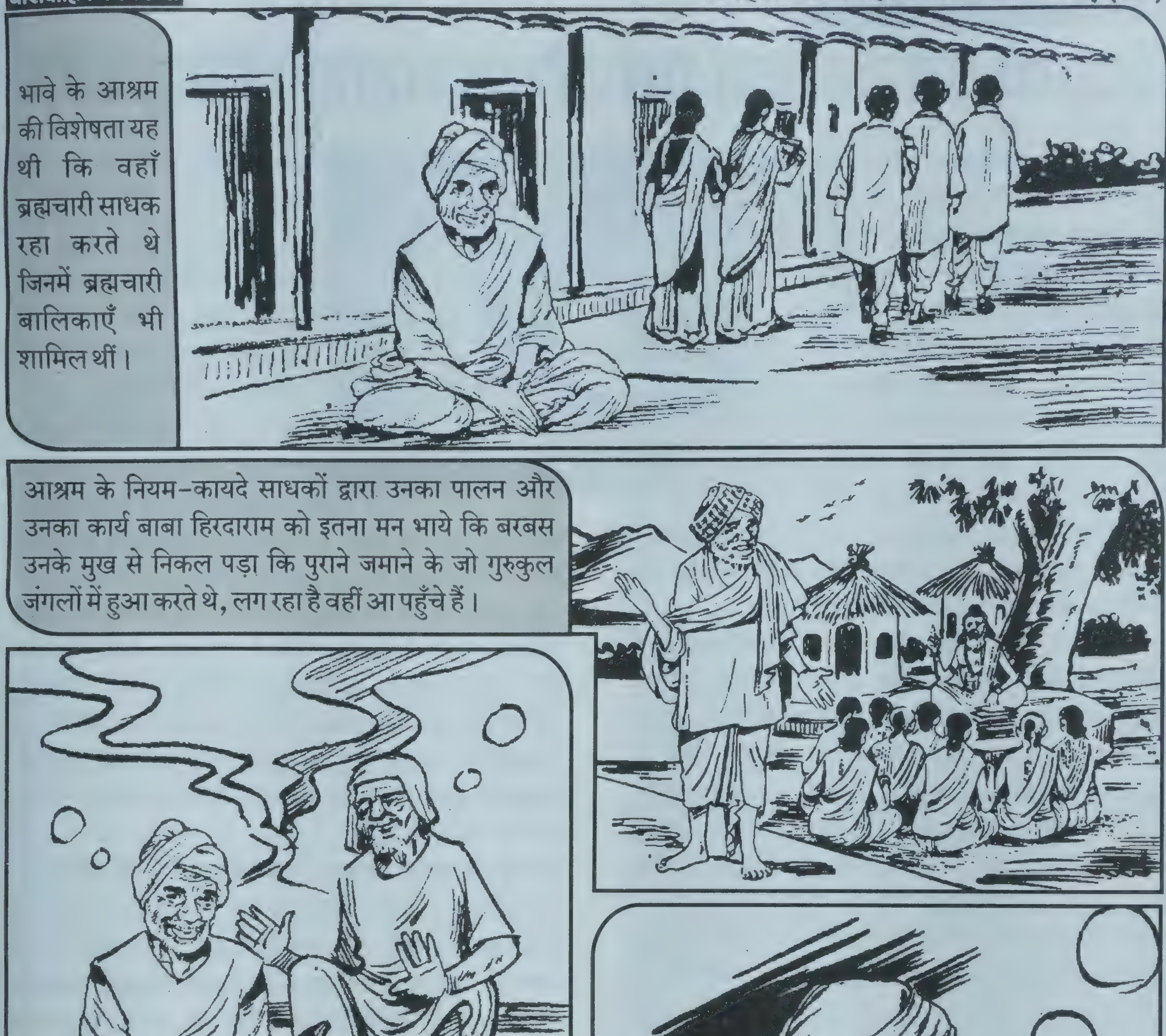
मुम्बा देवी मंदिर

मुम्बई शहर का नाम मुम्बा देवी के नाम पर रखा गया था। मुम्बा देवी का छः सदी पुराना मंदिर बोरी बंदर में स्थित था, जिसे अट्ठारहवीं सदी के मध्य में नष्ट कर दिया गया था। बाद में भुलेश्वर में एक नये मंदिर का निर्माण किया गया, जहाँ आज भी द्रविड़ों के वंशज पूजा करते हैं। मुम्बई निवासियों की इस मंदिर में बहुत मान्यता है। ऐसा माना जाता है कि जो भी यहाँ ईमानदारी से प्रार्थना करता है, देवी उसे निराश नहीं करती है।





प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिलै न कोइ।
प्रेमी कौं प्रेमी मिलैं, तब सब विष अमृत होइ।



प्रेम न खेतौं नींपजै, प्रेम न हाटि बिकाइ।
राजा-परजा जिस रुचे, सीस देइ लै जाइ।

शिक्षक का दायित्व एवं उद्देश्य महान : सिद्ध भाऊ



भोपाल । ब्रह्मलीन स्वामी हिरदाराम साहिब जी के उत्तराधिकारी श्रद्धेय श्री सिद्ध भाऊ जी ने कहा है कि शिक्षा का लक्ष्य महान होता है, क्योंकि उस पर ही देश की भावी पीढ़ी का भविष्य निर्भर करता है। शिक्षक का काम अन्य किसी भी काम से कहीं ऊँचा होता है। सिद्ध भाऊ जी ने यह बात तीन दिवसीय शिक्षक कार्यशाला के समापन अवसर पर कही। शहीद हेमूं कालानी एज्यूकेशन सोसायटी द्वारा शिक्षक-शिक्षिकाओं के लिए तीन दिवसीय सेमीनार का आयोजन किया गया था।

सेमिनार का उद्देश्य संस्था द्वारा संचालित मिठी गोविंदराम पब्लिक स्कूल, नवनिध हासोमल लखानी पब्लिक स्कूल विद्यासागर पब्लिक स्कूल, राधीबाई हासोमल खेतानी फाउन्डेशन स्कूल एवं केवलराम चैनराय पब्लिक स्कूल के शिक्षक-शिक्षिकाओं का स्वागत करने के साथ उन्हें विभिन्न कौशलों से परिचित करा कर व्यक्तित्व के अधिकतम विकास के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम का प्रारंभ श्रद्धेय श्री सिद्ध भाऊ जी के आशीर्वाद से प्रबंधन समिति के सदस्यों व शिक्षण संस्थाओं के प्राचार्य, उपप्राचार्य व प्रधानाध्यापिका की उपस्थिति में माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्जवलित कर किया गया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में संस्था के उपाध्यक्ष आइल साधवानी द्वारा ब्रह्मलीन परमहंस हिरदाराम साहिब जी एवं श्रद्धेय श्री सिद्ध भाऊ जी द्वारा महान लक्ष्य प्राप्ति हेतु गठित संस्था के उद्देश्य व संस्था द्वारा संचालित गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। द्वितीय सत्र में संस्था की एकेडमिक एवं प्लानिंग निर्देशक डॉ. शशि राय द्वारा शिक्षकों को शिक्षकीय गरिमा एवं दायित्वों से परिचित कराया गया। तत्पश्चात नवनिध गर्ल्स स्कूल की उप प्राचार्य डॉ. रीना राजपूत द्वारा शिक्षण में सृजनात्मकता व



रोचकता को कैसे बढ़ाया जाए विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया गया। कार्यक्रम के दूसरे दिन रत्नासागर पब्लिकेशन के सहयोग से श्री सूर्य नारायण द्वारा मोटिवेशनल सुपर स्टार विषय पर विभिन्न गतिविधियों द्वारा, शिक्षक-शिक्षिकाओं को मैनेजमेंट डलवपमेंट कौशल से संबंधित अति महत्वपूर्ण बातें सहज ढंग से बताई गई। तृतीय दिवस का प्रारंभ करते हुए ए सी साधवानी द्वारा कम्यूनिकेशन के लिए संप्रेषण कौशल पर प्रकाश डाला गया, साथ ही यह भी बताया गया कि एक शिक्षक बिना इस कौशल के किस प्रकार अपूर्ण है तथा इसे कैसे विकसित किया जा सकता है। कार्यक्रम की समाप्ति के पूर्व संस्था के मार्गदर्शक परम श्रद्धेय सिद्ध श्री भाऊजी द्वारा राष्ट्र निर्माण में शिक्षकों की महती-भूमिका के साथ शिक्षक-शिक्षिकाओं को जीवन के महानतम लक्ष्यों को प्राप्त करने के आसान मंत्रों से परिचित कराया गया।

संतजी के कारण बैरागढ़ देश और दुनिया में प्रसिद्ध : प्रमुख समाज सेवी मोहन भंभानी (लेगास) एवं मोहन लालवानी (मुम्बई) का संत हिरदाराम नगर (बैरागढ़) में आत्मीय स्वागत किया गया। वे ब्रह्मलीन स्वामी हिरदाराम साहिब जी के शिष्य हैं और दोनों का यहाँ चलने वाले विभिन्न सेवा कार्यों में अहम योगदान है।

वे सेवा कार्यों का अवलोकन करने एवं स्वामीजी के उत्तराधिकारी परम शिष्य श्रद्धेय श्री सिद्ध भाऊ जी से आशीर्वाद प्राप्त करने यहां आए थे। दोनों के सम्मान में साधु वासवानी स्कूल के नंदवानी भवन में स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री भंभानी ने कहा कि सेवा कार्यों में हमेशा सहयोग देना हर व्यक्ति का कर्तव्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि मनुष्य में राम-रहीम के दर्शन करने वाले स्वामी हिरदाराम साहिब

सभी राजनीतिक संस्थाएँ अपने झूठ के परिणामस्वरूप अन्त में मिट जाती हैं।

बिरह जलाई मैं जलौं, जलती जलहरि जाऊँ।
मो देख्यौ जलहरि जलै, संतौ कहाँ बुझाऊँ।

जी का नाम ही हमारे लिए एक सहारा है। जीव सेवा संस्थान के महासचिव महेश दयारामानी, सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय के मुख्य ट्रस्टी लोकचंद जनियानी, सुधार सभा के महासचिव विष्णु गेहानी की मुख्य उपस्थिति में आयोजित इस गरिमामय समारोह में मुम्बई से आए मोहन लालवानी ने कहा कि मनुष्य को अपने भीतर से अहम एवं द्वेष निकाल देना चाहिए। आपने कहा कि संतजी के कारण ही यह नगरी पवित्र बनी और इसका नाम देश तथा दुनिया में सम्मान के साथ लिया जाता है। आपने कहा कि संतजी त्याग की मूर्ति थे, जिनमें भगवान दिखता था। यहाँ छात्रा वर्षा जैन ने अत्यंत ही प्रभावी उद्‌बोधन दिया और कहा कि जो व्यक्ति दूसरों के बच्चों को संवारता है, वही सच्चा समाज सेवी है, और मोहन भंभानी व मोहन लालवानी ऐसा ही कर रहे हैं। कुमारी जैन ने कहा कि हमेशा संस्कारों के करीब रहना चाहिए। इस मौके पर दोनों अतिथियों का शाल एवं श्रीफल से सम्मान किया गया। आरंभ में श्री दयारामानी, श्री जनयानी, श्री गेहानी, भावना कलवानी, दीपा आहूजा ने अतिथियों का स्वागत किया। आरंभ में महेश दयारामानी ने अतिथियों के सम्मान में कहा कि हमारा उद्देश्य ब्रह्मलीन स्वामी हिरदाराम साहिब जी के वचनों के अनुसार समाज का उत्थान करना है और सेवा के पथ पर चलते हुए अंत में उस परमपिता परमेश्वर को प्राप्त करें। संतजी के बताए मार्ग पर चलकर उनके वचनों को अपने जीवन में उतारें। आपने बताया कि स्वामीजी का जीवन सेवा, समर्पण व पुरुषार्थ को समर्पित रहा और स्वामीजी के मार्ग पर ही मोहन भंभानी एवं मोहन लालवानी भी चलकर अपना जीवन सफल बना रहे हैं। श्री दयारामानी ने कहा कि सेवा कार्यों के कारण ही आज संत नगर तीर्थ बन गया है।

नृत्य प्रस्तुति के बीच समाजसेवी सम्मानित : सुधार सभा की ओर से साधु वासवानी स्कूल में आयोजित एक समारोह में लागोस से आए अप्रवासी भारतीय समाजसेवी मोहन भंभानी व मुंबई के दानवीर समाजसेवी मोहन लावानी का सम्मान किया गया। इस अवसर पर बच्चों ने रंगारंग देश भक्ति कार्यक्रम प्रस्तुत किया। समारोह में सभा के महासचिव विष्णु गेहाणी, हीरो ज्ञानचंदानी, जीव सेवा संस्थान के सचिव महेश दयारामानी, दीपादेवी आहूजा एवं लोकचंद जनियानी सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

भारतीय स्टेट बैंक सेवा कार्यों में हमेशा अग्रणी : भारतीय स्टेट बैंक की टीटी नगर शाखा के सहयोग से ब्रह्मलीन स्वामी हिरदाराम साहिब के आशीर्वाद से संचालित अग्रणी चिकित्सा संस्था सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय द्वारा आयोजित विशाल निःशुल्क कृत्रिम लैंस प्रत्यारोपण नेत्र शिविर का समापन हुआ। इस अवसर पर आयोजित एक गरिमामय समारोह में बैंक के मप्र एवं छत्तीसगढ़ के मुख्य महाप्रबंधक श्री एम. भगवंत राव मुख्य अतिथि थे। ब्रह्मलीन स्वामी हिरदाराम साहिब जी के उत्तराधिकारी परम शिष्य श्रद्धेय श्री सिद्ध भाऊ जी ने इस मौके पर अपने आशीर्वचनों में कहा कि ग्रामीण हमारे अन्नदाता हैं, उनके पास साधन एवं समय के अभाव व जानकारी नहीं होने के कारण वे अपनी आँखों की संपूर्ण देखभाल नहीं कर पाते, इस कारण हमारा दायित्व है कि हम उनके पास जाकर उनकी आँखों की जाँच कर दवाएं दें, और अगर आवश्यक हो तो उनकी आँखों के मोतियाबिंद सहित अन्य बीमारियों के आपरेशन करें। भारतीय स्टेट बैंक के सीजीएम श्री एम.भगवंत राव ने स्वामी हिरदाराम साहिब जी के आशीर्वाद से संचालित सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय की चिकित्सा सेवा गतिविधियों की सराहना की और कहा कि सेवा के मामले में भारतीय स्टेट बैंक हमेशा अग्रणी रहा है एवं भविष्य में भी सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय को इस महत्वपूर्ण सेवा कार्य में सहयोग करता रहेगा।

अगस्त 2009 (श्रावण शुक्ल एकादशी–भाद्रपद शुक्ल एकादशी–2066)

रवि	दशमी 30	द्वादशी 2	तृतीया 9	दशमी एकादशी 16	तृतीया चतुर्थी 23
सोम	एकादशी 31	त्रयोदशी 3	चतुर्थी 10	द्वादशी 17	पंचमी 24
मंगल		चतुर्दशी 4	पंचमी 11	त्रयोदशी 18	षष्ठी 25
बुध		पूर्णिमा 5	षष्ठी 12	चतुर्दशी 19	सप्तमी 26
गुरु		पूर्णिमा 6	सप्तमी 13	अमावस्या 20	अष्टमी 27
शुक्र		प्रतिपदा 7	अष्टमी 14	प्रतिपदा 21	नवमी 28
शनि	एकादशी 1	द्वितीया 8	नवमी 15	द्वितीया 22	नवमी 29

1 पवित्रा (पुत्रदा) एकादशी; 2 पवित्रा (द्वादशी), श्रीधर द्वादशी, श्यामबाबा द्वादशी; 3 श्रावण का अन्तिम सोमवार व्रत, प्रदोष व्रत; 5 स्नान–दान–व्रत की श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबंधन (राखी) सायं 5.11 के बाद (भद्रा के उपरान्त), पूर्णिमा व्रत, कोकिला व्रत, नारयली पूर्णिमा, गायत्री जयंती; 9 कज्जली (कजरी) तीज, टीजडी (सिन्धी), संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत; 11 रक्षापंचमी, कोकिला पंचमी; 13 शीतला सप्तमी, बसौड़ा, श्रीकृष्णावतार अष्टमी व्रत (स्मार्तो का), संत ज्ञानेश्वर जयंती महोत्सव; 14 श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रतोत्सव, गोकुलाष्टमी; 15 नन्दोत्सव, महर्षि अरविंद जयंती; 16 एकादशी व्रत (स्मार्तो का), श्रीरामकृष्ण परमहंस स्मृति दिवस; 17 अजा (जया) एकादशी व्रत, 18 मासिक शिवरात्रि व्रत; 21 नवीन चन्द्र–दर्शन; 22 वाराहावतार जयंती; 23 हरितालिका तीज, सिद्धिविनायक चतुर्थी; 24 ऋषि पंचमी, वाराह पंचमी; 27 श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत, श्रीराधाष्टमी व्रतोत्सव, स्वामी हरिदास जयंती, शारदाष्टमी; 28 श्रीराधाष्टमी व्रत, श्रीचंद्रनवमी; 31 पद्मा एकादशी व्रत, जलझूलनी एकादशी।

रिश्वत देकर एक सच्चे आदमी का वोट खरीद करने के लिए सारे संसार की सम्पत्ति भी अपर्याप्त है।

बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोई।
राम वियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ।

श्री गोपाल कृष्ण सेवा समिति के अगस्त में छह रक्तदान शिविर

श्री गोपाल कृष्ण सेवा समिति द्वारा बाबा हिरदाराम के 104वें अवतरण दिवस के अवसर पर 15 अगस्त से 2 अक्टूबर तक की अवधि में बारह रक्तदान शिविर लगाए जाने प्रस्तावित हैं। इनमें से समिति द्वारा छह शिविर अगस्त माह में आयोजित किए जाएँगे।

समिति का 71वाँ रक्तदान शिविर शनिवार, 15 अगस्त को सहारा चैम्बर, मण्डल कार्यालय, टोंक रोड पर सहारा मुस्कान जयपुर और सहारा इण्डिया परिवार के सहयोग से आयोजित किया जाएगा। समिति का 72वाँ रक्तदान शिविर रविवार, 16 अगस्त को राजकीय माध्यमिक विद्यालय, मुरलीपुरा में पूज्य सिन्धी पंचायत, मुरलीपुरा स्कीम, मुरलीपुरा स्कीम व्यापार मण्डल विकास समिति एवं लायन्स क्लब जयपुर प्राईम स्टार के सहयोग से आयोजित किया जाएगा। समिति का 73वाँ रक्तदान शिविर रविवार, 23 अगस्त को भगवान श्री झूलेलाल मन्दिर, सैक्टर 3, प्रताप नगर, सांगानेर में समस्त पूज्य सिन्धी पंचायतें, प्रताप नगर, सांगानेर के सहयोग से आयोजित किया जाएगा। रविवार, 23 अगस्त को 74वाँ रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएँगा। यह शिविर भगवान श्री झूलेलाल मन्दिर, शास्त्री नगर में पूज्य पंचायत एवं अखिल राजस्थान सिन्धी युवा संगठन, जयपुर के सहयोग से लगाया जाएगा। रविवार, 30 अगस्त को समिति द्वारा 75वाँ एवं 76वाँ एक साथ दो रक्तदान शिविर आयोजित किए जाएँगे। 75वाँ रक्तदान शिविर भगवान श्री झूलेलाल मन्दिर, डी ब्लॉक, विद्याधर नगर में भारतीय सिन्धु सभा, जयपुर महानगर एवं विद्याधर नगर पूज्य सिन्धी पंचायत संस्था के सहयोग से आयोजित किया जाएगा। समिति द्वारा 76वाँ रक्तदान शिविर बाल भवन, आदर्श नगर, जयपुर में सिन्धु युवा शक्ति एवं पूज्य सिन्धी पंचायत, आदर्श नगर के सहयोग से आयोजित किया गया।

सेवा पथ पर दो साथी और जुड़े

लायन्स क्लब इन्टरनेशनल

देश की एक और सेवाभावी संस्था लायन्स क्लब समिति के सेवा पथ के सहयोगी बने हैं। लायन्स क्लब द्वारा किए जाने वाले सेवा कार्य सर्वविदित हैं। लायनेस क्लब जयपुर वेस्ट की अध्यक्षा श्रीमती पूनम अडवानी एवं लायन्स क्लब जयपुर प्राईम स्टार के अध्यक्ष श्री हासो मूलचन्दानी और सचिव श्री नरेश पारवानी के प्रयासों से आने वाले दिनों में शिविर आयोजित किए जाएँगे।

सहारा मुस्कान एवं सहारा इण्डिया परिवार

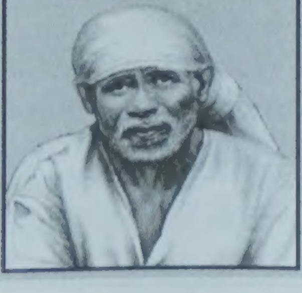
देश की जानी-मानी वित्तीय संस्था सहारा इण्डिया परिवार और सहारा मुस्कान समिति के नए साथी के रूप में जुड़े हैं। यह संस्था अपनी सामाजिक प्रतिबद्धताओं का निर्वाह करते हुए समय-समय पर सेवा कार्य सम्पादित करती रहती है। सहारा इण्डिया परिवार के जयपुर मण्डल प्रमुख श्री लक्ष्मीकांत बन्नासी के विशिष्ट सहयोग से 15 अगस्त को रक्तदान शिविर आयोजित किया जाएगा।



जुलाई माह में लगा एक रक्तदान शिविर

यह उल्लेखनीय है कि समिति द्वारा जुलाई माह में एक रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। रविवार, 12 जुलाई को आयोजित समिति के 70वें रक्तदान शिविर को गुरुद्वारा श्री गुरुनानक दरबार, रेल्वे कॉलोनी, जगतपुरा में गुरुद्वारा श्री गुरुनानक दरबार, जगतपुरा, नागरिक सहकारी समिति, जगतपुरा और आनन्देश्वर महादेव मन्दिर समिति के सहयोग से आयोजित किया गया। इसमें 25 यूनिट रक्त एकत्रीकरण किया गया।

शिरडी सांईं बाबा की प्रतिमा लगाने का प्रस्ताव



जयपुर के वरिष्ठ समाज सेवी, सिन्धु नगर, नाहरी का नाका, जयपुर निवासी श्री सुगनोमल गुरनानी शिरडी के सांईं बाबा की संगमरमर की प्रतिमा स्थापित करने के इच्छुक हैं। ऐसी संस्थाएँ जिन्होंने पहले से मन्दिर बनवाया हुआ हो या बाबा की प्रतिमा स्थापित करने की इच्छुक हों तथा प्रतिमा स्थापित कर योग्य सेवा करने में समर्थ हों, वे श्री गुरनानी जी से 094147-96762 पर सम्पर्क कर सकती हैं। श्री गुरनानी जी श्री गोपाल कृष्ण सेवा समिति के उपाध्यक्ष, सिन्धु नगर, नाहरी का नाका सिन्धी पंचायत के अध्यक्ष व शहर की कई सांस्कृतिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं।

मृत्यु से भयभीत होना कायरों का काम है, कारण वास्तविक जीवन में मृत्यु ही जीवन है।

पांहण केरा पूतला, करि पूजै करतार।
इही भरोसै जे रहे, ते बूड़े काली धार।



icon®
MCB & ISOLATARS
SWITCHES
HOUSE HOLD WIRING
EXTENSION COARDS
ELECTRIC IRON
FAN
P.V.C. TAPE
PUMP
MODULAR SWITCHES
an ISO Certified Co.
AAJ HO YA KAL SURAKSHA MILE HAR PAL
icon®
Electrical Accessories
Home Appliances
Wires & Cables
With ISI Mark
SHRI BHAWNA TRADERS
B-8, Shiv Marg, Bani Park, Jaipur-302016
©2202341 Mobile : 94140-55249, 94140-58316
E-mail : iconlight@rediffmail.com

RAJHIN/2008/27180
VOL. 1 ISSUE 12
POSTAL REGN. NO. : RJ/JPC/M-59/2009-11
DATE OF PUBLISHING : 25 JULY 2009



Veto Switchgears & Cables Pvt. Ltd.

Regd. Off. :- 803,Palm Spring Complex, Link Road, Malad West, Mumbai-400 064
Corp. Off. :- 230, Sindhi Colony, Raja Park, Jaipur-302004 (Raj.)
Tel.:- 0141-3229605, 3229606, 94140-77187, 94140-77183
Fax :- 0141-2606126, Email : vetoswitchgears@yahoo.co.in